



RNI No. MPHIN/2013/52983

राष्ट्रीय हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष-11, अंक-1 जुलाई से सितम्बर 2023 मूल्य-25/-

• रंग संस्कृति
के 10 वर्ष



- आज़ादी को बताया अपनी प्रेमिका...
- किसी भी बुलंद इमारत के लिए
सबसे महत्वपूर्ण उसकी नींव होती है।

संदीप
राशिनकर्ण



मुख्यमंत्री लाडली बहना योजना

₹ 3000
तक बढ़ेगी दायि

21 वर्ष से ही मिलेगा लाभ



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

बहनों का आनंदकर्मान

शिवराज सिंह चौहान



1 करोड़
25 लाख
बहनों
को
हर महीने
₹ 1000



रेणुका
वासुदेव वासुदेव
वर्धनी दृष्टि एस्टेट
में घर खरीदने का लाभ
प्राप्त करने वाली वर्धनी।



शंखि शंखा
वासुदेव वासुदेव
में घर खरीदने का लाभ
प्राप्त करने वाली वर्धनी।



सविता विकारी
वासुदेव वासुदेव
में घर खरीदने का लाभ
प्राप्त करने वाली वर्धनी।



मीना विकारी
वासुदेव वासुदेव
में घर खरीदने का लाभ
प्राप्त करने वाली वर्धनी।



मीता विकारी
वासुदेव वासुदेव
में घर खरीदने का लाभ
प्राप्त करने वाली वर्धनी।

D18425/23

प्रमोशनल प्राइवेट लिमिटेड

संपर्क: जल विभाग, पर्म लार्वाइप और निया कार्पोरेशन प्रिवेट लिमिटेड, फोन: ०७५५-२७००६०६

RNI No MPHIN/2013/52983

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति एवं साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष - 11, अंक-1, जुलाई से सितम्बर 2023

मूल्य-25 रुपये

सम्पादक
वन्दना अत्रे

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक वन्दना
अत्रे द्वारा कलासिक कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स जहांगीराबाद,
भोपाल से मुद्रित एवं 'यनी हाऊस', 141, अमरनाथ कॉलोनी,
सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल से प्रकाशित।

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। पत्रिका में संग्रहित आलेखों, चित्रों में व्यक्त
रचनाकारों, लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रधान कार्यालय: यनी हाऊस 141, अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म कोलार रोड, भोपाल
(म.प्र.) - 462042, सम्पर्क: 0755-2495707, 9425004536

सुविचार



क्रोध से भ्रम पैदा होता है, भ्रम से
बुद्धि व्यग्र होती है। जब बुद्धि व्यग्र
होती है, तब तर्क नष्ट हो जाता है।
जब तर्क नष्ट होता है, तब व्यक्ति
का पतन हो जाता है।

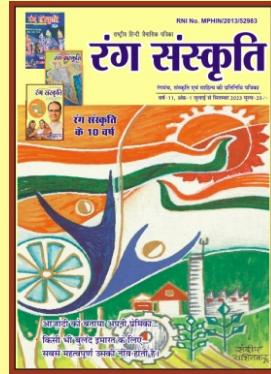
- भगवत् गीता



जब सफलता हासिल होती है
तो आप उसे दोहराना चाहते
हैं, इसके विपरीत बड़ी हार
जरूर परेशान करती है,
लेकिन कम समय के लिए।
यदि आप प्रोफेशनल हैं तो
आपको बहते रहना होगा।

यदि आप चाँस मिस करते हैं तो आपको अगले मौके के
बारे में सोचना होगा। अफसोस में ढूबने का तो सवाल
ही नहीं...।

- लियोनेल मेसी



आमुख कथा
आजादी को बताया अपनी प्रेमिका, तो किसी ने
देश की खातिर पौत को लगाया गले
आवरण पृष्ठ रेखांकन - संदीप राशनकर
संयोजन - अंकित गौड़

विवरणिका

क्र.	विवरणिका	पृष्ठ
1.	विवरणिका	1
2.	पाठ्क प्रतिक्रिया	2
3.	विशेष टिप्पणी	3
4.	आजादी को बताया अपनी... (आमुख कथा)	4-6
5.	किसी की बुलंद इमारत के लिए...	7-9
6.	रंग संस्कृति के 10 वर्ष	10-11
7.	संदीप राशनकर की रेखाएं...	12-14
8.	स्वयं सिद्धा सौम्या और चरित्रवान...	15
9.	योग शिक्षा का एक बेहतर साधन	16-17
10.	शिव की श्रृंगारिता नगरी महेश्वर	18-19
11.	संगदारी दर्शाती लेन-देन...	20-21
12.	रोटी-कहानी	22-24
13.	म याने मक्खन का	25
14.	गीत-ग़ज़ल	26-30
15.	निमाड़ी लोकबोली के...	31-34
16.	रंगमंच	35-37
17.	उस मंच से शर्मिला जी ने...	38-39

रंग संस्कृति

प्रबंध एवं कार्यकारी सम्पादक
यतीन्द्र अत्रे

साहित्य सम्पादक
सुरेश तन्मय

रंगमंच परामर्श
बालेन्द्र सिंह

सहयोग एवं मार्गदर्शन

डॉ. पदमाकर सराफ,
आदित्य नारायण उपाध्याय
अशोक द्विवेदी, हेमन्त उपाध्याय,
श्रीमती मधुबाला अत्रे, दीपक सिटोके, मुकुल त्रिपाठी

फोटो जर्नलिस्ट
दिनेश दवे

रंग संस्कृति में प्रकाशित चित्र, समाचार, रचना, आलेख पर लेखक, रचनाकार से किसी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं लिया जाता है और ना ही उन्हें प्रदान किया जाता है। उनकी स्वेच्छिक स्वीकृति के पश्चात सम्पादक मण्डल के अंतिम निर्णय पर ही प्रकाशन सम्भव होता है।

सम्पादक

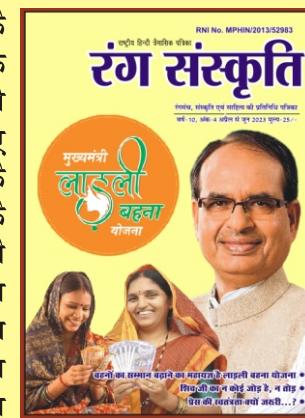
हस्ताक्षर

- ♦ डॉ. ओमप्रकाश कादयान
- ♦ शिशिर उपाध्याय
- ♦ महेश अग्रवाल
- ♦ हेमंत उपाध्याय
- ♦ हरीश दुबे
- ♦ हरी जोशी
- ♦ हरिवल्लभ शास्त्री
- ♦ डॉ. कुंवर प्रेमिल
- ♦ सुनील चौरे 'उपमन्यु'
- ♦ सुरेश कुशवाह 'तन्मय'
- ♦ संदीप सृजन
- ♦ राम शर्मा परिंदा
- ♦ राकेश गीते 'रागी'
- ♦ व्यग्र पाण्डेय
- ♦ विवेक मृदुल
- ♦ विजय विश्वकर्मा
- ♦ दीपक चाकरे
- ♦ यतीन्द्र अत्रे

पाठक प्रतिक्रिया

सम्पादक जी,

राम भारत ही नहीं पूरी दुनिया के गौरव..... मैं लेखक ने आस्था से अधिक अनुकरण पर ध्यान केंद्रित कराया है। यह सही है राम कथा हम जीवन में कई बार सुनते आए हैं, प्रतिवर्ष हर शहर - गांव में राम कथा के आयोजन होते हैं लेकिन भगवान राम के चरित्र का अनुकरण कितने व्यक्ति कर पाते हैं? यह हमारे बीच यह एक जागरूकता का विषय होना चाहिए। नई पीढ़ी को भी राम कथा के भावार्थ को समझने हेतु प्रेरित करना होगा, अन्यथा वधाँ तक रावण के पुतले का दहन करने के बाद भी हम बुराइयों से मुक्ति नहीं पा सकेंगे।



नागेंद्र सिंह

J-91 प्रियंका नगर कोलार रोड भोपाल

सम्पादक जी,

नव निर्मित संसद भवन देश की विविध संस्कृति का प्रतीक... यतीन्द्र अत्रे के इस लेख में आठवीं शताब्दी से सत्ता हस्तांतरण के समय प्रयुक्त होने वाली राज दंड परंपरा की जानकारी मिलती है। देश की परंपरा, संस्कृति, परस्परसंवाद में प्रयुक्त अनेक भाषाएं विश्व में हमारी एक निराली पहचान करती है। सचमुच यह गौरव का विषय होगा।

शीतल कोठारी

फ्लेट नं-6, बीएसएल क्वाटर असुल ग्रो, टालिस्टाय हाउस के सामने कनाट पैलेस नई दिल्ली

हमारी लड़ाई मुद्रित भर लोगों से शेष...



यतीन्द्र अत्रे

अभी हाल ही में हमने 77 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया, उसका जोश अभी भी कुछ कम नहीं हुआ है। देश में चारों तरफ तिरंगा यात्राओं के माध्यम से घर-घर तिरंगा लहराया। मध्य प्रदेश की 200 विधानसभा क्षेत्रों में सड़कों पर देशभक्ति का ऐसा रंग संभवतः पहले नहीं देरवा गया होगा। इस अवसर पर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले पर ध्वजारोहण करते हुए देशवासियों को शुभकामनाएं दी, वही मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने समाचार पत्रों के माध्यम से प्रदेश वासियों को दिए संदेश में कहा- तिरंगा हमारे देश के इतिहास की संरक्षित और मूल्यों का प्रतीक होने की साथ उन वीर शहीदों की देश भक्ति और देश प्रेम का प्रतीक है, जिनके बलिदान की बदौलत हमने आजाद भारत की विरासत पाई है। शासकीय अवनों पर जगमग रोशनी के साथ घर-घर लहराता तिरंगा, स्कूल-कॉलेज, समाजसेवी संस्थाओं में मनाए जा रहे स्वतंत्रता दिवस और गली चौराहों में बजते देशभक्ति गीत, इन दृश्यों को देरव एक बात तो साफ है कि अब देशभक्ति का रंग हमारे र्वून के साथ मिलकर दौड़ने लगा है। प्रधानमंत्री मोदी विदेशी दौरों में मिले सम्मान को ऐसे ही देशवासियों को समर्पित करते आए हैं। लगता है देश प्रेम का यह ज़ब्बा भारत में चिरकाल तक ऐसे ही चलता रहेगा..

पर इसी बीच कभी-कभी देश को तोड़ने वाली ताकतें भी हावी होती आई हैं, उस समय ऐसा लगता है कि भाईचारे का प्रेम पटरी पर से उतरने लगा है। महिलाओं के साथ होने वाला अत्याचार देश की प्रगति को दूसरी दिशा में मोड़ने का प्रयास करता है। मणिपुर के इंफाल, विष्णुपुर, चुरचांदपुर, तेरनोउपल और कांगपोकपी में विछले दिनों जो घटनाएं हुई ऐसा लगा जैसे 1947 में हुए बंटवारे की यादें ताजा हो गई हैं। भूल गए कि जिस आजादी का जश्न हम मनाते हैं वही आजादी हमें धर्म, जाति की संकीर्ण सोच से ऊपर उठकर उन लोगों ने दिलाई है जिसमें हिंदू, मुस्लिम, सिरव, ईसाई सभी समिलित थे उनमें वे महान महिलाएं भी समिलित थीं जिनकी गाथाएँ इतिहास में सुरक्षित हैं। स्वतंत्रभारत में हम भूल जाते हैं और फिर बार-बार कोई हमें याद दिलाता है कि हम सब भाई-भाई हैं। जिस देश में एक ओर माननीय उच्च न्यायालय देश की महिलाओं को जिसमें महिला को सिर्फ महिला पत्नी को सिर्फ पत्नी और यदि वही महिला हाउसवाइफ है तो उसे नाम होम मेकर से जानने वाइडलाइन जारी करता है, वहीं कुछ मुद्रित भर लोग देश में महिलाओं को शर्मसार करने से नहीं चुकते हैं। हमारी लड़ाई इन्हीं मुद्रित भर लोगों से होना शेष है जो हमारी विकसित हो चुकी सोच को बदलने का प्रयास कर रहे हैं। अब समय आ गया है कि हम मुगलों, अंग्रेजों द्वारा हमारे अंदर तैमनस्यता के बोए बीज को उखाड़ फेंके, उस कुंठ से बाहर निकले जो हमें 76 वर्ष पीछे की ओर धकेलती है। तब हम पाएंगे की हमारे देश की आन, बान और शान तिरंगा यात्रा हमारे घरों से होती हुई दिलों में भी प्रवेश कर रही है।

जय हिंद जय भारत

प्रबंध एवं कार्यकारी संपादक

मो. - 9425004536

ई-मेल - y.atre3636@gmail.com

आज़ादी को बताया अपनी प्रेमिका, तो किसी ने देश की खातिर मौत को लगाया गले

यतीन्द्र अत्रे

शासकीय भवनों पर जगमग रोशनी के साथ घर-घर लहराता तिरंगा, स्कूल—कॉलेज, समाजसेवी संस्थाओं में मनाए जा रहे स्वतंत्रता दिवस और गली चौराहों में बजते देशभक्ति गीत, इन दृश्यों को देख एक बात तो साफ है कि अब देशभक्ति का रंग हमारे खून के साथ मिलकर दौड़ने लगा है। प्रधानमंत्री मोदी विदेशी दौरों में मिले सम्मान को ऐसे ही देशवासियों को समर्पित करते आए हैं। लगता है देश प्रेम का यह जज्बा भारत में चिरकाल तक ऐसे ही चलता रहेगा...



आज के इस स्वतंत्र भारत को दास्तां की बेड़ियों से मुक्त करने में जिन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अदम्य साहस, त्याग और बलिदान का परिचय दिया है उसकी मिसाल विश्व के इतिहास में कहीं भी देखने को नहीं मिलती है। यह हमारे लिए गर्व करने का विषय है कि ऐसे कई शूरवीर जिन्होंने मध्य प्रदेश की धरती पर जन्म लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। पूरा देश आज उन्हें नमन कर रहा है इतिहास में झांक कर देखें तो उनकी दास्तान पढ़ने—सुनने वालों के आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

प्रस्तुत संकलित अंशों के माध्यम से इन सेनानियों के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के उन सभी अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं जो आज भी हर पीढ़ी के लिए प्रेरणादाई है।

चंद्रशेखर आजाद — 23 जुलाई, 1906 को चंद्रशेखर आजाद का जन्म अलीराजपुर जिले के भाबरा ग्राम में हुआ था। 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद



के अल्फेड पार्क में इनकी पुलिस के साथ मुठभेड़ हुई जिसमें वे आखिरी गोली खुद को मारकर शहीद हो गए।

रानी अवंतीबाई — रानी अवंतीबाई भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। रानी अवंतीबाई मध्य प्रदेश के रामगढ़ (वर्तमान मडला जिला) की रानी थीं। 1857 की क्रांति का बिगुल बजा तो वे अपने स्वाभिमान एवं राज्य की स्वतंत्रता के लिये अपने देशभक्ति सिपाहियों के साथ स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। 20 मार्च, 1858 को इस वीरांगना ने रानी दुर्गावती का अनुकरण करते युद्ध लड़ते हुए अपने आप को चारों तरफ से घिरा देख स्वयं तलवार धोंप कर देश के लिए बलिदान दे दिया।



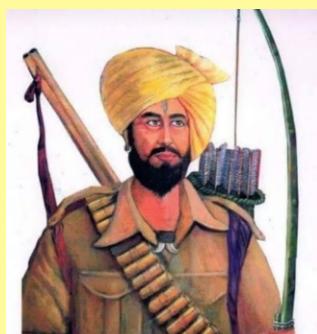
भास्कर राव चवरे— भास्कर राव हिंदुस्तानी लाल सेना की एक ऐसी महत्वपूर्ण



कड़ी थे जिनके बिना किसी सैन्य संग्राम की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। अगस्त 1942 से काफी पहले भास्कर राव को पता चल गया था कि देश में व्यापक क्रांति होने वाली है इसलिए उन्होंने पत्नी प्रभावती को अपने मित्र डॉक्टर जगन्नाथ महोदय के यहाँ खंडवा भेजने का निर्णय लिया। रेल ने सीटी दी, गार्ड ने हरी झंडी लहराई ठीक उसी समय भास्कर राव ने पत्नी का हाथ सहलाते हुए कहा — यह सच है कि तुम मेरी धर्मपत्नी हो परंतु मेरी एक प्रेमिका और भी है और उससे मैं तुमसे ज्यादा प्यार करता हूँ उसी को पाने के लिए मैं तुम्हें गांव भेज रहा हूँ जब तक वह मुझे नहीं मिलेगी मैं स्थाई रूप से गांव लौटकर नहीं आऊंगा प्रबुद्ध पत्नी प्रभावती समझ गई कि उसके दीवाने पति देश की आजादी की बात कर रहे हैं वह मुस्कुराने लगी और रेल ने इसी समय रफतार पकड़ ली।

(रंग संस्कृति में प्रकाशित, मणि मोहन चौरे के आलेख से)

टंट्या भील— निमाड़ क्षेत्र के गौरव तथा आदिवासियों के मसीहा। टंट्या भील का जन्म पूर्वी निमाड़ के खंडवा जिले में 1842 में हुआ। टंट्या वनवासी क्षेत्र के एक ऐसे क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आदिवासियों को एकत्र कर क्रांति का बिगुल बजाया था। 'द न्यूयार्क टाइम्स' के 10 नवंबर, 1889 के अंक में टंट्या भील की गिरफतारी की खबर प्रमुखता से प्रकाशित हुई थी, जिसमें इन्हें इंडिया का 'रॉबिन हुड' बताया गया था। वे अंग्रेजों से धन लूटकर गरीब आदिवासियों में बाँट दिया करते थे। टंट्या, गरीबों के लिये टंट्या मामा या जननायक बन चुके थे। अंततः होल्कर पुलिस ने इन्हें गिरफतार कर अंग्रेजों को सौंप दिया। 10 अक्टूबर, 1889 को टंट्या को फाँसी पर लटका दिया गया।



खाज्या नायक— खाज्या नायक अंग्रेजों के भील पल्टन के एक सामान्य सिपाही थे। बाद में उन्हें किसी गलती के कारण 10 साल की कैद हुई, जिस कारण से खाज्या के मन में अंग्रेज शासन के प्रति धृणा के बीज अंकुरित हो गए। जब 1857 की क्रांति के दौरान अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह भड़का तब खाज्या नायक बड़वानी क्षेत्र के क्रांतिकारी नेता भीमा नायक से मिल गए। यहीं से इन दोनों की जोड़ी बनी, जिसने भीलों की सेना बनाकर निमाड़ क्षेत्र में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँका। अप्रैल 1858 को बड़वानी के पास आमल्यापानी गाँव में अंग्रेज सेना और भील सेना की मुठभेड़ हो गई, जिसमें खाज्या नायक के बीर पुत्र दौलतसिंह व अनेक योद्धा शहीद हो गए।

कुंवर चैन सिंह— नरसिंहगढ़ के राजकुमार कुंवर चैन सिंह को मध्य प्रदेश का प्रथम शहीद कहलाने का गौरव प्राप्त है। वे जून 1824 में सिहोर के दशहराबाग मैदान में शहीद हुए थे।

शंकर शाह एवं रघुनाथ शाह— गढ़ मंडला के प्रतापी राजा शंकरशाह तलवार एवं कलम दोनों पर समान अधिकार था। 1857 की क्रांति के दौरान देशभक्ति की कविताओं की रचना कर अपनी जनता में स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का भाव भरा। इसी कारण ब्रिटिश नौकरशाही के कारिदों द्वारा शंकरशाह व उनके बेटे रघुनाथ शाह को बंदी बनाकर 18 दिसंबर, 1858 को तोप के मुँह में बाँधकर उड़ा दिया गया।

ऐसे ही अनेक सैनानी जिन्होंने मध्यप्रदेश की



धरती पर जन्म लिया और भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। उन क्रांतिवीरों में सआदत खान का नाम भी लिया जाता है। जिन्होंने 1857 की क्रांति में गोपनीय तरीके से आंदोलनकारियों की सहायता की। मालवा की धरती पर जन्मे बख्तावर सिंह ऐसे वीर थे जिन्होंने अंग्रेजों की सत्ता की नींव हिला दी। तो शहीद किशोर सिंह ने बुन्देलखण्ड में अंग्रेजी सेना से टक्कर लेकर उन्हें चने चबाने पर मजबूर कर दिया। सागर जिले के राजा बरद्वाली शाह जूदेव की भूमिका भी 1857 की क्रांति में बड़ी महत्वपूर्ण रही है। महाकौशल क्षेत्र के वीर गुलाब सिंह पटेल का नाम भी मध्यप्रदेश के प्रमुख स्वतंत्रता सैनानियों में लिया जाता है। उन्होंने पूरे महाकौशल क्षेत्र में 'करो या मरो' की भावना को प्रबल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। मध्यप्रदेश के ही कटनी जिले के विजयराघौरगढ़ के राजा सरयू प्रसाद ने तो मात्र 17 वर्ष की आयु में ही अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत शुरू कर दी थी। सन् 1865 में सशस्त्र सैनिकों के पहरे पर काले पानी की सजा के लिये 'रंगून' जाते समय इस वीरात्मा ने पहरेदार की कटार छीन अपने सीने में घोप ली और शहीद हो गए। उन्होंने कहा था कि 'मैं काला पानी से मौत को अधिक पसंद करता हूँ। मेरी प्रजा में तुच्छ से तुच्छ व्यक्ति भी जेल में रहना पसंद नहीं करता फिर मैं तो उनका राजा हूँ।'

सिपाही बहादुर सरकार — भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 6 अगस्त 1857 को मध्य प्रदेश की सीहोर छावनी में विद्रोह के बाद स्थानीय सिपाहियों द्वारा स्थापित अपनी स्वतंत्र सरकार का नाम सिपाही बहादुर सरकार रखा गया था। मेरठ की क्रान्ति का असर मध्य भारत में भी आया और मालवा के सीहोर में अंग्रेज



फोटो-इंटरनेट से साभार

पॉलीटिकल ऐजेंट का मुख्यालय होने के कारण यहां के सिपाहियों ने भी विद्रोह कर दिया और इस छावनी को पूरी तरह अंग्रेजों से मुक्त करवा लिया। किंतु यह सरकार मात्र 6 महीने ही चली। झांसी की रानी के विद्रोह को कुचलने के लिए बर्बर कर्नल हिरोज को एक बड़े लाव लश्कर के साथ भेजा गया।

इन्दौर में सैनिकों के विद्रोह को कुचलने के बाद कर्नल हिरोज 13 जनवरी 1858 को सीहोर पहुंचा और अगले दिन 14 जनवरी 1858 को 356 विद्रोही सिपाहियों को सीहोर की सीवन नदी के किनारे धेर कर गोलियों से छलनी कर दिया। क्रांतिकारियों के इस सामूहिक हत्याकाण्ड के बाद सीहोर छावनी पर पुनः अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया। इस बर्बर हत्याकाण्ड के कारण इस स्थान को मालवा के जलियांवाला के रूप में जाना जाता है। अन्ततः 1947 को देश आजाद हुआ, प्रतिवर्ष मनाए जाने वाले स्वतंत्रता दिवस पर ऐसे वीर सपूतों को जिन्होंने मादरे वतन के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये और हमें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार दिए। पूरा देश उन्हें नमन करता है।

मो.: 9425004536

संकलन सहयोग - नागेन्द्र सिंह

किसी भी बुलंद इमारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण उसकी नींव होती है....

पूर्व एयर मार्शल शशिकर चौधरी के साथ विनय उपाध्याय का संवाद

रपट : संजय सिंह राठौर

पिछले दिनों डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय खण्डवा में आयोजित वनमाली व्याख्यान माला के अंतर्गत भारतीय वायुसेना के पूर्व एयर मार्शल, तीन बार राष्ट्रपति पदक से विभूषित शशिकर चौधरी से उनके शालेय जीवन के अभिन्न मित्र और टैगोर विश्व कला एवं संस्कृति केन्द्र के निदेशक, विनय उपाध्याय का संवाद हुआ। 77वाँ स्वतंत्रता दिवस के इस पावन अवसर पर संजय सिंह राठौर की रपट साभार हम रंग संस्कृति के पाठकों के लिए उपलब्ध करा रहे हैं।

एयर मार्शल शशिकर चौधरी ने सी वी रमन विश्वविद्यालय, खण्डवा के नवनिर्मित 'रमन सभागार' में निमाड़ के जनपदों से आए नौजवानों और गणमान्यजनों की मौजूदगी में विनय उपाध्याय के सवालों के जवाब देते हुए कहा कि एक सैनिक के दिल में राष्ट्र के लिए मर मिटने का जज्बा होता है। राष्ट्र उसका धर्म और देशसेवा उसका कर्तव्य होता है। देश की आन, बान और शान के लिए सरहद पर अपने प्राणों को न्यौछावर करने में वह जरा भी नहीं हिचकता है।

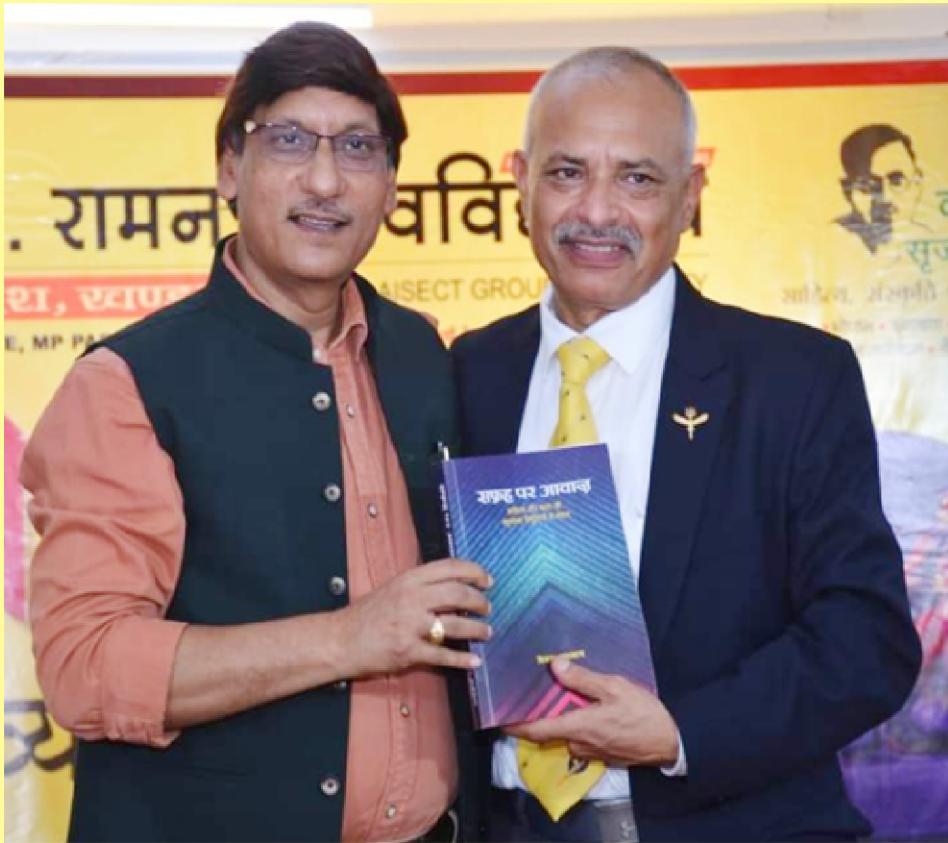
खण्डवा और निमाड़ की सरजमीं से शशिकर

ने अपने गहरे लगाव से संबंधित प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि खण्डवा मेरी जन्मभूमि हैं। किसी भी बुलंद इमारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण उसकी नींव होती है। मेरी नींव खण्डवा में ही रखी गई। इस नींव के पहले पत्थर के तौर पर जैन पाठशाला मैं मैंने कक्षा एक से पांचवीं तक की पढ़ाई की। इसके बाद कक्षा 6 से 11 वीं तक की पढ़ाई शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हुई, साठ के दशक में जिसके यशस्वी शिक्षक जगन्नाथ प्रसाद चौबे वनमाली रहे। शशिकर ने जोड़ा कि शिक्षा ग्रहण करने के इन प्रारंभिक ग्यारह सालों में जो नैतिक और व्यावहारिक शिक्षा मुझे मिली, उसने मुझे मार्शल के मुकाम तक पहुँचाने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। खण्डवा से इंदौर इंजीनियरिंग कॉलेज में गया तो 6 महीने तक मैं इसी असमंजस की स्थिति में रहा कि क्या किया जाए! मैं हिंदी मीडियम से पढ़ा था। उस वक्त यह महसूस हुआ कि कहीं गलत निर्णय तो नहीं ले लिया? लगने लगा कि पारिवारिक व्यवसाय में ही रहा होता तो अच्छा होता। बीकॉम कर लेता और उसके बाद पुश्तैनी सराफा की दुकान या मेडिकल स्टोर संभालता, लेकिन भाग्य की लकीरों में कुछ और ही लिखा था। प्रारंभिक कठिनाइयों को पार करते हुए इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की। हॉस्टल में रहता था। उसी दौरान मैंने कई नौकरियों के आवेदन के साथ वायु सेना के लिए भी आवेदन किया था। जिस दिन मेरा आखरी पेपर हुआ उसी दिन खण्डवा से मेरे पिताजी का फोन आया कि बेटा तुमने भारतीय वायुसेना के लिए जो आवेदन किया था, उसके साक्षात्कार के लिए वाराणसी जाना है। मुझे इस



पूर्व एयर मार्शल शशिकर चौधरी

“शो मस्ट गो ऑन” रंगमंच ही नहीं सेना में भी लागू होता है



बाल सरवा विनय उपाध्याय के साथ

नेत्र ज्योति दिन—ब—दिन कम होती जा रही थी। दीदी ने कहा कि फौज में रहकर जो मान—सम्मान तुम्हारे साथ—साथ परिवार और समाज को मिलेगा वह किसी और सेवा में दुर्लभ, इसलिए तुम पिताजी और परिवार की चिंता हम पर छोड़ दो और अपने आने वाले कल पर ध्यान दो।..... यही मेरी जिंदगी का टर्निंग प्वाइंट था। मुझे अपने शहर खंडवा ने जो दिया, वह अद्वितीय है। मैं आज जो कुछ भी हूँ खंडवा की वजह से हूँ। अपने करीब चालौंस साल पुराने स्कूली दोस्त विनय उपाध्याय के साथ आज बचपन के शहर खंडवा में संवाद कर बेहद खुश हूँ। रमन विश्व विद्यालय ने जो सम्मान दिया, इसे पाकर मैं अभिभूत हूँ।

सेना के कठिन प्रशिक्षण से जुड़े सवाल पर शौधरी ने कहा कि सेना का प्रशिक्षण हमें आमजन से कुछ अलग बनाता है। एक सोल्जर बनाता है। यह सीख देता है कि फौजी की सिर्फ एक जात होती है। फौज का प्रशिक्षण बहुत कठिन होता है। आप किसी भी परिस्थिति में रहकर आपदाओं का सामना कर सकें। मैंने डेढ़ साल का कठिन प्रशिक्षण प्राप्त किया था। प्रशिक्षण समयबद्ध होता है। वहाँ सख्त अनुशासन और टीम के साथ काम करने का विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। समय—समय पर नई टेक्नोलॉजी को भी समझना होता है।

षष्ठिकर ने बताया कि मेरा सौभाग्य है कि मुझे सेना में रहते हुए रुड़की खड़कपुर में आगे की पढ़ाई करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि फौज में शामिल होते ही पहले दिन से ही पढ़ाई प्रारंभ हो जाती है और यह आपकी सेवाओं के अंतिम दिन तक जारी रहती है।

जब घर परिवार से संदेश आते हैं तो एक फौजी का दिल भी तड़प उठता होगा? इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि हमें शुरू से ही प्रशिक्षित किया जाता है कि एक फौजी के लिए देश पहले होता है। जिस फौज में आप हैं उसकी जरूरत पहले होती है। आपकी स्वयं की जरूरत अंत में आती है। प्रशिक्षण में हमें अपनी भावनाओं पर अंकुश लगाना भी सिखाया जाता है। ‘शो मस्ट गो ऑन’ रंगमंच ही नहीं, सेना में भी लागू होता है।

शौधरी ने देश के लिए रशिया में सेवा देने के अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि यह मौका बहुत

बात की बहुत खुशी भी हुई और मैं भीतर ही भीतर जरा मायूस भी था। मैं नजर का चश्मा पहनता था। मुझे लगा कि भारतीय वायु सेना में मेरा चयन शायद ही हो पाएगा। फिर भी मैंने वाराणसी जाने का मन बना लिया। सोचा, कि चयन नहीं होगा तब भी काशी विश्वनाथ के दर्शन तो मैं कर ही आऊँगा। लेकिन मुझे तो भारतीय सेना पुकार रही थी। मेरा चयन हो गया। मेरे परिवार से इसके पहले कभी कोई फौज में नहीं गया था। मैं पहला युवा था जो किसी फौज में भर्ती होने के लिए घर से निकला था। मैंने अपनी दीदी शिवानी जैन से बातचीत की, क्योंकि मेरे पिताजी की देखने की

सेना हमेशा देश की रक्षा के लिए तत्पर रहती है...



पारिवारिक रनेह की झलक

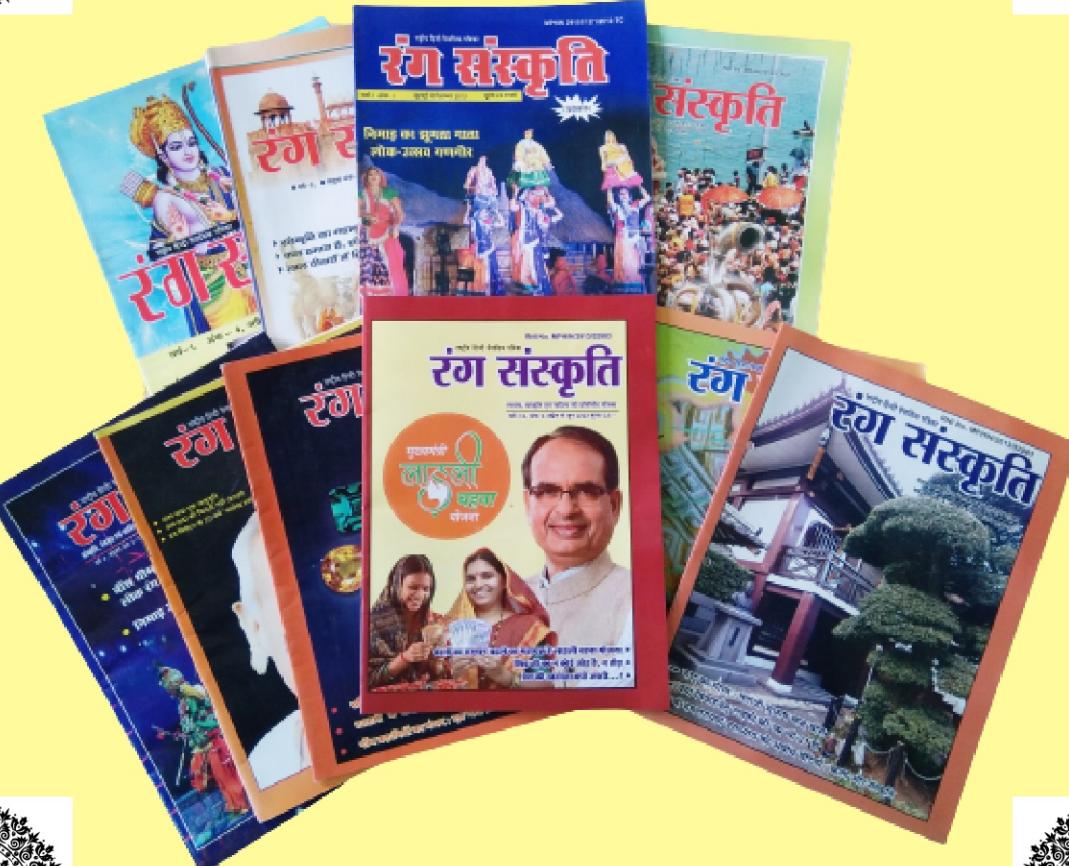
निभाते हुए करना होता है कि कहीं उस देश को हम पर यह शक ना हो कि हम उसकी जासूसी कर रहे हैं। देश की राजनीतिक सत्ताओं के हस्तक्षेप का सेना पर क्या असर होता है? सवाल के जवाब में एयर मार्शल शशिकर चौधरी ने बेबाक होकर कहा कि सेना हमेशा अराजनैतिक होती है। कोई भी पार्टी सत्ता में आए हमारी फौज के नजरिए में कभी कोई बदलाव नहीं होता है। हमारे लिए सिर्फ हमारा वतन, हमारा राष्ट्र ही सर्वोपरि होता है। उन्होंने कहा कि युद्ध की परिस्थितियों के पूर्वानुमान की जानकारी भी हमारी एजेंसियों द्वारा लगातार इकट्ठी की जाती है। विश्व में हो रहे युद्ध का लगातार सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है और अपनी तैयारी उसी अनुसार आंतरिक तौर पर लगातार की जाती है। वर्तमान में दुनिया में महायुद्ध जैसी कोई भी स्थिति नहीं है। भारत के अंदर नक्सलवाद के चलते कुछ क्षेत्रों में विपरीत परिस्थितियाँ थीं, उन्हें भी हमने सुनियोजित रूप से काफी हद तक खत्म कर दिया है। आतंकवाद और अलगाववाद के सवाल पर उन्होंने कहा कि जब तक आतंकवादियों और अलगाववादियों को असली बारूद और आर्थिक मदद बाहर से मिलती रहती है तब तक आतंकी गतिविधियाँ होती रहती हैं। इस पर काफी हद तक अंकुश लगा है। सर्जिकल स्ट्राइक के दौरान हमारी वायुसेना ने अंदर घुसकर आतंकियों के अड्डों को नष्ट कर दिया था। कारगिल का युद्ध भी हमारे लिए काफी कठिन था। बहुत विपरीत परिस्थितियों और दुर्गम बर्फिली पहाड़ियों में हमारी सेना ने सही रणनीति के तहत कारगिल फतह किया था।

मन की पीड़ा व्यक्त करते हुए शशिकर ने कहा कि अजीब मानसिकता है कि युद्ध ही सैनिक की अहमियत का पैमाना बन गया है। जब तक वार नहीं होता, फौज की अहमियत नहीं आँकी जाती है। जबकि फौज हमेशा देश की रक्षा के लिए तत्पर रहती है। सेना के प्रति सभी में सम्मान का भाव जगाना जरूरी है कोरोना के बाद सैनिकों के प्रति सम्मान का भाव काफी हद तक जागा है। यह भरोसे का भी प्रतीक है।

बिले लोगों को ही मिल पाता है। रशिया जाना मेरे लिए बहुत रोमांचकारी अनुभव रहा है। दो ही एंबेसी बहुत महत्वपूर्ण हैं। एक रशिया और दूसरी फ्रांस। हम दूसरे देशों से सैन्य सामग्री खरीदते हैं। हमारी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए कई उपकरणों का निर्माण और उनके रखरखाव की बारिकियों को जाँचा परखा जाता है। चीजों को क्रमबद्ध समझा जाता है। यह बहुत लंबी प्रक्रिया होती है। उसके लिए बार-बार दिल्ली से रशिया या अन्य देश आना-जाना संभव नहीं हो पाता है, इसलिए वहाँ पर भारत के प्रतिनिधि के तौर पर हमें भेजा जाता है। डिप्लोमेसी के रूप में भी हमें भेजा जाता है। वहाँ पर आँखें और कान खोलकर और मुँह बंद कर अपने वतन भारत के प्रतिनिधि के तौर पर बहुत सी जानकारियाँ इकट्ठाकर प्रतिदिन भेजना होती है। यह बहुत सजगता के साथ मित्रता

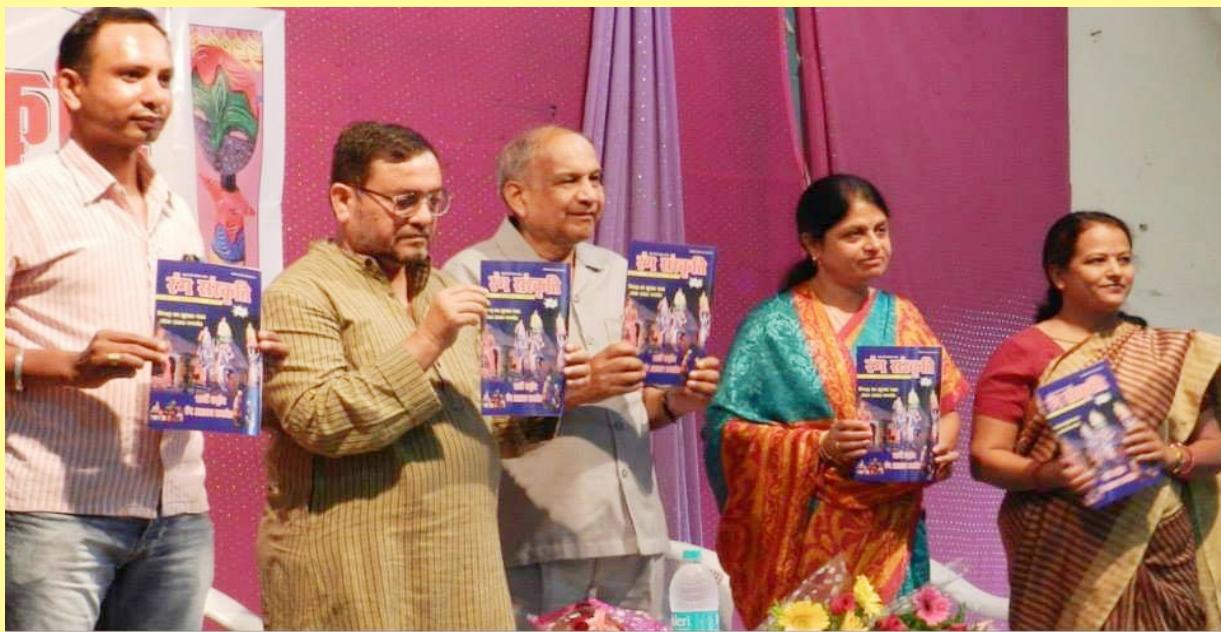
रंग संस्कृति के 10 वर्ष

यतीन्द्र अत्रे



अवसर है रंग संस्कृति के 10 वर्षों की यात्रा को पाठकों से साझा करने का, मुझे अच्छी तरह याद है कि वर्ष 2013 में दैनिक प्रदेश की धड़कन के संपादक श्री अशोक द्विवेदी के मार्गदर्शन में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयन कार्यालय से जब रंग संस्कृति शीर्षक स्वीकृत होकर आया तब मैं इसके व्यापक अर्थ से अनभिज्ञ था। रंगकर्मी होने के नाते तब सिर्फ यह अभिलाषा थी कि रंगमच एवं संस्कृति से मेल खाता हुआ कोई शीर्षक की प्राप्ति हो जाए। मुख्यमंत्री एवं गणमान्य व्यक्तियों के शुभकामना संदेश के साथ विषयों का इसमें समावेश होता गया, आलेख, गीत—गज़ल, कहानी, रंगमंच—समीक्षा एवं समाचार, लघु कथाएं, सिने समाचार इन सबको 40 पृष्ठों में समेटना, उनको यथास्थान सम्मान देना और पाठकों की रुचि का ध्यान रखना बड़ा कठिन कार्य था। लेकिन कहते हैं कि जब इरादा पक्का हो तो ईश्वर भी आपका सहयोग करते हैं, बस आपको उनके अवतरित रूप को पहचानना भर है। सो ईश्वर रूपी मार्गदर्शन एवं सहयोगियों के साथ रंग संस्कृति की एक दशक की यात्रा आरंभ हुई...

पद्मश्री प्राप्त स्वर्गीय राम नारायण उपाध्याय खंडवा के परिवार से सर्वप्रथम प्रोत्साहन मिला तब ऐसा लगा राम दादा का आशीर्वाद साथ है। ललित भाई (ललित नारायण उपाध्याय) से बिना पावती लिए रु. 500 का सहयोग मेरे मस्तिष्क में अंकित हो गया फिर क्या था ललित भाई की रचनाओं के साथ खंडवा से हेमंत भाई शिशिर भाई उपाध्याय की रचनाएं रंग संस्कृति का गौरव बढ़ाने लगी। कारवां आगे बढ़ा तब भोपाल से श्रीराम



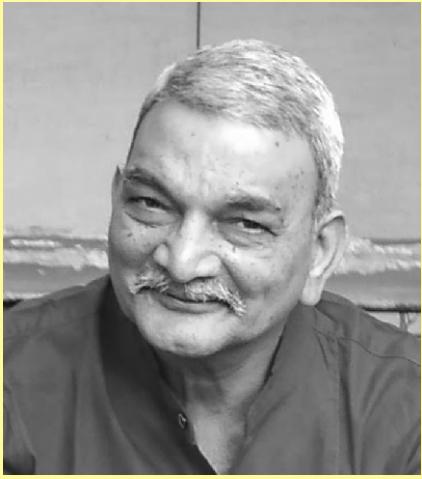
माहेश्वरी के सहयोग के साथ साहित्यकार मणिमोहन चौरे, कला अध्येता श्री वसंत निर्गुणे जी, सुरेश कुशवाह तन्मय मार्गदर्शक बने तो भू वैज्ञानिक माननीय पद्माकर शराफ ने अपने आविष्कारों एवं सांस्कृतिक आलेखों से रंग संस्कृति की झोली भर दी। फिर श्रीगणेश पर पीएचडी की उपाधि प्राप्त डॉक्टर सुभाष अत्रे (अब पुलिस अधिकारी से सेवा निवृत) के आलेखों में श्री गणेश के असंख्य संज्ञा रूपों की जानकारी के साथ पाठकों को निमाडी मालवी व्यंजनों का स्वाद भी मिलने लगा। फिर एक ऐसा समय आया जब उद्घोषक एवं कला समीक्षक भाई विनय उपाध्याय, विवेक मृदुल लिखित भारत भवन, रवीन्द्र भवन एवं शहीद भवन में मंचित नाटकों की समिक्षाएँ प्रकाशित होने लगी और फिर सुप्रसिद्ध चित्रकार संदीप राशिनकर के रेखाचित्र रंग संस्कृति के आवरण पृष्ठ की गरिमा बढ़ाने लगे। तब मुझे अनुभूति हुई कि रंग संस्कृति अब लोक संस्कृति में परिवर्तित हो रही है। रंग संस्कृति को भी अब सहज अनुभूति हो रही होगी कि उसके आज असंख्य सहयोगी हाथ हैं और उन हाथों में कलम है जो रंग संस्कृति को हमें शा प्रोत्साहन देती रहेगी। खरगोन से बृजेश बड़ोले, शरद त्रिवेदी, महेश्वर से हरीश दुबे, विजय जोशी, कुँवर उदय सिंह अनुज, सेन साहब, खंडवा से मेरे अपने सुनील उपमन्यु, गोविंद शर्मा, दीपक चाकरे, विपिन साध, भोपाल से सुखदेव राव चौरे, व्यंग्यकार हरि जोशी, स्व. अशोक तारे, रंगकर्मी साथी बालेन्द्र सिंह, प्रवीण चौधे, उज्जैन से डॉ. हरिश कुमार सिंह, संदीप सृजन, राजेश रावल एवं इन सब की रचनाओं को यथा स्थान सम्मान देने वाले रंग संस्कृति के साहित्य संपादक सुरेश तन्मय। आप सभी गुणियों को साधुवाद। आशा है आपके सहयोग से रंग संस्कृति दिन प्रतिदिन उजली और रंगीन होती रहेगी।



सम्पर्क : 9425004536

संदीप राशिनकर की रेखाएं बोलती हैं, म्यूरल लुभाते हैं

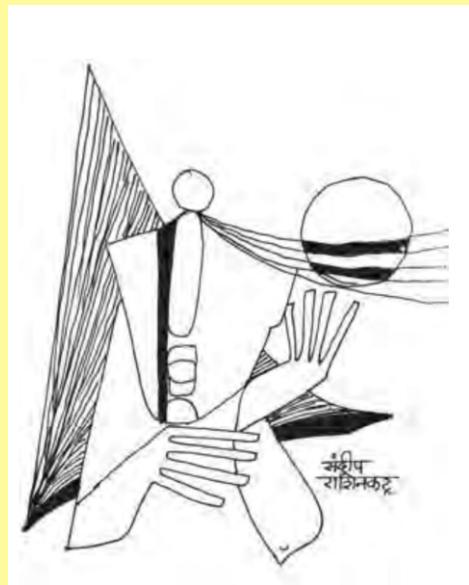
डॉ. ओमप्रकाश कादयान



जिस तरह अलंकारों को कविताओं का गहना कहा जाता है उसी तरह रेखांकन किसी भी साहित्यिक पत्रिकाओं, पुस्तकों, रचनाओं का श्रृंगार होते हैं, क्योंकि रेखांकन जब किसी रचना के साथ छपते हैं तो रचना का आर्कषण व महत्व बढ़ जाता है। रेखांकन साथ होने से रचना पढ़ने का मन करता है। किसी पत्रिका या पुस्तक में जब रंगीन या काले रेखांकन छपते हैं तो पाठक की रुचि बढ़ जाती है इसमें कोई संदेह नहीं। विविध विधाओं पर रचनाएं लिखने वाले तो बहुत हैं किंतु रेखांकन बनाने वाले बहुत कम। उनमें भी अच्छे रेखांकन बनाने वाले बहुत कम हैं किंतु हमारे ही बीच में कुछ कलाकार ऐसे भी हैं जो बहु प्रतिभाशाली हैं। उनमें एक नाम है संदीप राशिनकर। ये बहुचर्चित नाम है। अपनी कला दक्षता, सृजनशीलता व कर्मठता के कारण उन सभी कलाकारों में शायद सबसे चार्चित व लोकप्रिय नाम है जो अपनी कला को समर्पित है। संदीप काले स्कैच, पैन, रंगों का प्रयोग करते हैं। ये रंगीन तथा काले दोनों तरह के रेखांकन तथा पेंटिंग जुनून के साथ करते हैं। अगर हम गहराई से इनकी कला का अवलोकन करते हैं तो पता चलता है कि कितने गहरे अर्थ लिए होते हैं।

रेखांकन इनके रेखांकनों में प्रकृति के हर रूप से लेकर खेत खलिहान, नदी, झरनों, पहाड़ों, लोक कलाओं, लोक संस्कृति की महक महसूस होती है। रेखाओं पर रेखाएं, रेखाओं में रेखाएं किसी भाव व आत्मा की तरह एकाकार होती हुई नजर आती हैं। साधारण सी दिखने वाली संदीप की रेखाएं बहुत कुछ कहती हैं, बोलती हैं। बतियाती हैं। अपनी कोई ना कोई दास्तां कहती नजर आती हैं। हर रेखा एक नया चित्र, नया विष्व बनाती दिखाई देती है। ये ही रेखाएं किसी किसान, मजदूर की स्थिति को स्पष्ट करती हैं। इन्हीं रेखाओं में गांव की खुशहाली, तो शहर की तंग जिंदगी को साधारण तरीके से अभिव्यक्त कर जाती हैं। किसान का पसीना, मजदूर की मेहनत, नारी का त्याग, पिता की संवेदना, बच्चों की निश्छलता को आसानी से प्रकट कर जाती हैं। रेखाएं समानांतर हों, आड़ी-तिरछी हों, पेढ़ सी तनी हों, लहरों सी बिखरी हों, हवा सी गतिमान हों, या निर्जीव वस्तु सी पड़ी दिखाई देती हों, ये रेखाएं निर्जीव नहीं हैं। बहुत कुछ कहने वाली, गहरे भाव प्रकट करने वाली, किसी को उद्वेलित करने वाली, मनोरंजन करने वाली या बहुत कुछ सिखाने वाली रेखाएं निर्जीव नहीं हो सकती। संदीप की रेखाओं में जो गति है तो भावों का वेग है, कहीं उदासी है तो कहीं उमंगों का पारावार—सा लगता है और जब इन गतिशील रेखाओं में कलाकार संदीप रंग भरते हैं तो उदास रेखाएं भी उमगित सी लगती हैं। जैसे—जैसे ये रेखांकनों में रंग भरते हैं वो पेंटिंग का रूप लेती जाती हैं। रंगों का सहारा पाकर संदीप की रेखाएं इंद्रधनुषी रंगों से खिल उठती नजर आती हैं। हालांकि हर रंगीन रेखांकन पेंटिंग नहीं होती किंतु रंगों से खिल अवश्य उठते हैं। ये ही चटक रंग जीवन की गहराइयों को प्रकट करते हैं तो हलके रंग अपना नया रूप, नया आकार पा जाते हैं।

जैसे रंग प्रति को अति सुंदर बनाते हैं, उसी तरह इनके रेखांकन रंगों का स्पर्श पाकर सजीव हो उठते हैं। काली रेखाओं व रंगीन चित्रों में से किसी का भी महत्व कम नहीं होता। ये दोनों अपनी—अपनी जगह साथक हैं, उपयोगी हैं तथा प्रेरणाप्रद हैं। मन को छूने वाली भाव—प्रवणता, कला के विभिन्न आयामों से सृजित कला संदीप



का खुद का मानना है कि कला के रचनात्मक मूल्य को सहेजने की आवश्यक शर्त है कि कला जनमानस में न सिर्फ पैठ बनाएं बल्कि उनके मन में सहज आत्मीयता का भाव भी जागृत करे। येनकेन प्रकारेण कलाकृतियों के ऊंचे दाम तो हासिल किए जा सकते हैं किंतु उसे कला प्रेमियों के मध्य लोकप्रिय नहीं बनाया जा सकता। कलाकारों का दायित्व है कि कला को दीवाने खास से निकालकर दीवाने आम की पसंद बनाएं। संदीप अपनी कला के बारे में कहते हैं कि कलाएं जीवन को सुंदर ही नहीं समृद्धि बनाती हैं। जनमानस में कलाओं के प्रति अभिरुचि व आसक्ति का निर्माण करना यानी समाज और दुनिया को खूबसूरत बनाना है। रचनात्मकता ही है जो समाज में प्रेम व भाईचारे का निर्माण कर सकती है। विघ्वंस के इस भयावह दौर में विघ्वंस का मुहतोड़ जवाब सिर्फ रचनात्मकता ही हो सकती है। इसीलिए समाज में कलाओं और रचनाधर्मिता की स्थापना व संवर्धन की



आवश्यकता है। साथ ही मैं मानता हूँ कि सृजक को कलाकार दर्शक ही बनाते हैं। जब तक आप की कला दर्शकों द्वारा मान्य, स्वीकृत या प्रशंसित नहीं होती तब तक आप मात्र सृजक है, कलाकार नहीं। कलाकार वह ताज हैं जो आप स्वयं धारण नहीं कर सकते। इसे दर्शकों द्वारा ही आपकी कला की स्वीकृति पर पहनाया जाता है। मेरा मानना है कि कलाओं को कला दीर्घाओं से निकालकर लोगों के बीच ले जाने की आवश्यकता है। कला को लोगों के जीवन में शामिल करने की आवश्यकता है। लोक जीवन में कला दृष्टि विकसित करने के पक्षधर संदीप मानते हैं, विज्ञापन और प्रतियोगिता प्रशंसकों—समीक्षाओं से नहीं बल्कि जन—जन की स्वीकार्यता से कोई कलाकार दीर्घ जीवी होता है। ये इंजीनियर होने के नाते बनाने वाली अपनी कृतियों पर गहरा चिंतन करते हैं।

इसलिए इनका कला व तकनीकी पक्ष मजबूत होता है। इनकी रेखाएं अपना अलग प्रभाव दर्शक पर छोड़ जाती हैं। ये रेखांकन अपने आसपास एक खूबसूरत दुनिया का निर्माण करते हैं। इनके रेखांकन कविताओं की तरह सार्थक है उपयोगी है तथा मार्गदर्शन का काम करती है। मनोरंजन करती हैं तो हमें सृजनशीलता की दुनिया से परिचित करवाती है।

देशभर में रेखांकन बनाने वाले तो बहुत लेकिन, 8–10 कलाकार ऐसे हैं जो पत्र—पत्रिकाओं में छाए रहते हैं। उनमें भी शायद संदीप सबसे ज्यादा छपने वाले कलाकार हैं। हिंदुस्तान की शायद ही कोई ऐसी साहित्यिक, सांस्कृति, कला पत्रिका हो जिसमें इनके रेखांकन ना छपते हाँ, जो पत्रिकाएं आमतौर पर पढ़ने को मिल जाती हैं तथा रेखांकन को सम्मान के साथ जगह देती है, उनमें से अधिकतर में इनके रेखांकन छपते रहते हैं। अब तक इन द्वारा बनाए 25,000 से अधिक रेखांकन पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, पुस्तकों में छप चुके हैं। सैकड़ों पत्रिकाओं व विभिन्न पुस्तकों के मुख पृष्ठ पर इनके रंगीन चित्र भी छप चुके हैं। सैकड़ों साहित्यिक पुस्तकों के कवर बना चुके हैं तथा अंदर के रेखांकन भी छपते रहे हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी की पुस्तक कोविड-19 : सम्झता और समाधान तथा भारत रत्न सत्यजीत रे की पुस्तक जादुई बाल कहानियां के रेखांकन इन्होने बनाए हैं। इसके साथ—साथ जादुई बाल कहानियां का रंगीन मुख्यपृष्ठ भी इन्होने तैयार किया है। इसी तरह बहुत सी चर्चित पुस्तकों के लिए कवर पेज व रेखांकन इन्होनें तैयार किए हैं। कमाल की बात ये है कि इन्होनें कला का कहीं से प्रशिक्षण नहीं लिया।

सिविल इंजीनियरिंग के ज्यामितीय आकारों में प्रशिक्षित संदीप चित्रकला को सर्वग्राह्य, सर्व स्वीकृत वैशिक भाषा मानते हैं। अनादि काल से शैल चित्र व भित्ति चित्रों की उपस्थिति से प्रेरित होकर कागज, फिर दीवार और उसके बाद धातुओं पर रेखाओं का रचना संसार संजोते चले जाते हैं। वे रेखांकन को चित्रकला की आत्मा या प्राणवायु मानते हैं। संदीप कहते हैं अभिव्यक्ति में अपेक्षित निर्विवाद स्वतंत्र होने के बावजूद कलाकारों को अपनी अभिव्यक्ति को सामाजिक दायित्वों की कसौटी पर कसना चाहिए। कलाएं परस्पर जुड़ाव का माध्यम है, ना कि तकरार व विलगाव का। मानव मन में रचनात्मकता के अंकुरण व संवर्धन की आवश्यकता है।

संदीप कहते हैं घटनाएं प्रेरणा बन जाती हैं, जो संस्मरणों की तालिका पकड़कर शब्द या रेखाओं के रूप

मैं आकर ग्रहण कर लेती है। इनका मानना है कि शैक्षणिक दृष्टि से सिविल इंजीनियर होने के बावजूद बचपन से कला मेरे लिए सब कुछ रही है। हालांकि तकनीकी योग्यता ने मेरी दृष्टि को ना सिर्फ विकसित किया बल्कि एलीवेशनल म्यूरेल्स के क्षेत्र में मैं जो शोध परक बूढ़ा कला कर्म कर पाया उसमें तकनीकी योग्यता का एक अहम योगदान रहा है। यहां ये उल्लेख प्रासांगिक है कि लेखन का क्षेत्र हो, चित्रकला का क्षेत्र हो या रंगकर्म का क्षेत्र हो हर क्षेत्र हो हर क्षेत्र में मिलने वाले सहदय वरिष्ठकला कर्मियों ने ना सिर्फ मेरे सृजन को सराहा बल्कि समय—समय पर अपने अमूल्य मार्गदर्शन से उसे निखारा भी। पिताजी (अप्पा) के हर कार्य को चुनौती मानकर करने की अदम्य प्रेरणा ने मुझे अलग—अलग विधाओं में चुनौतियां स्वीकारने, उसे पूरा करने व उसमें अपनी क्षमता अनुसार योगदान करने के काबिल बनाया। मैं आज जो कुछ हूँ जैसा हूँ और जितना हूँ उस सब में मेरे परिवार, मेरे आत्मीय, वरिष्ठ, कनिष्ठ मित्रों एवं विशेष मेरी रचनात्मकता को परोक्ष अपरोक्ष रूप से अपार स्नेह करने वाले कला रसिकों का बहुमूल्य योगदान है, जिसके बिना मेरा वह बनना संभव नहीं था जो मैं हूँ।



7 मई, 1958 में इंदौर में जन्मे तथा इंदौर निवासी जाने—माने चित्रकार, लेखक, समीक्षक संदीप राशिनकर लंदन, मुंबई, गोवा, इंदौर, गोवा, इंदौर, नीमच आदि स्थानों में अपनी एकल चित्र प्रदर्शनियां लगा चुके हैं तथा अनेक स्थानों पर दीवारों पर आकर्षक म्यूरल बना चुके हैं। इनके म्यूरल की सार्थकता व आकर्षण के कारण दीवारें भी बोलती हैं।

कलाकार संदीप राशिनकर ने बहुत से आवासीय भवनों, औद्योगिक परिसरों तथा परियोजनाओं में म्यूरल बनाए हैं। इनमें इंदिरा सागर परियोजना, भारत पेट्रोलियम इंदौर और बीना, देवास डेवलपमेंट का स्पोर्टर्स कांपलेक्स, औरंगाबाद बुअरी, स्वर लता स्टूडियो, यूटीआई बैंक की इमारतें शामिल हैं। संदीप ने एलिवेशन म्यूरल, इंटरनल म्यूरल तथा वॉल पेटिंग (पेटिंग म्यूरल) तीनों तरह के म्यूरल में कमाल का काम किया है। एलिवेशन म्यूरल इनके खास तरह के म्यूरल होते हैं जो विशेष आकर्षण को केन्द्र करे जा सकते हैं। इन म्यूरल में जहां प्रकृति के प्रतीक नजर आएंगे वहीं संस्कृति के दर्शन भी होंगे। इन म्यूरेल्स में इनके इंजीनियर की टैक्नोलॉजी के जरिए कला पक्ष स्पष्ट रूप से दिखता है। इनके म्यूरल इतने सुंदर होते हैं कि दर्शक बिना

पलक झपकाए निहारता ही रह जाता है। ज्यामितीय आकृतियों, प्राकृतिक बिम्बों, सांस्कृतिक प्रतीकों तथा संतुलित रंगों का अद्भुत सामंजस्य देखने को मिलता है। इनके म्यूरल से कोई भी इमारत कला भवन सा प्रतीत होती है। इमारत का महत्व व आकर्षण बढ़ जाता है। ये किसी भी कला की सही उपयोगिता तथा कलाकार की सार्थकता कही जा सकती है। कलाकार यहां भी अपनी कला दक्षता का परिचय कुशलतापूर्वक दे जाते हैं। इसके अलावा ये आलेख व कविताएं भी लिखते हैं। इनके साहित्य में भी प्रकृति सौंदर्य, संस्कृति के रंग तथा समाज का यथार्थ देखने—पढ़ने को मिलता है। अब तक इनकी 2 पुस्तकें कविताओं पर आ चुकी हैं। कैनवस पर शब्द तथा कुछ मेरी कुछ तुम्हारी ये पुस्तक इनकी धर्मपत्नी श्रीमति राशिनकर तथा इनकी कविताओं की संयुक्त पुस्तक है। | संदीप जी अच्छे समीक्षक भी है। इनकी करीब 100 पुस्तक समीक्षाएं छप चुकी हैं। आलेखों का विषय अधिकतर कला ही होती है। ये करीब 5 वर्षों तक दैनिक भास्कर में कला पर कॉलम लिखते रहे हैं।

सम्पर्क : 180-बी, मार्वल सिटी, हिसार, मो. - 8607788798

लौटते बसंत का प्रेम गीत

स्वयंसिद्धा सौम्या और चरित्रिवान जॉन का अलौकिक प्रेम संवाद

शिशिर उपाध्याय



हिंदी की उत्कृष्ट और प्रांजल भाषा में ढले हुए डायलॉग बड़े आकर्षक हैं, सौम्या द्वारा प्रचलित दांपत्य जीवन को अपनी तर्क पूर्णता से झुठलाते हुवे फिल्म अपने गंतव्य तक पहुंचती है। मुकेश जी ने सौम्या के ३ माह के इंतजार को आकर्षक बनाने हेतु गीतकार अमीत डेविड का गीत कहना तो बहुत कुछ था, मगर कह न सके को पार्श्व में लेकर एक विरहणी का कुशल चित्रण किया है। जीवन में प्रेम को आदर्श दर्शाते हुवे 'नायक - नायिका' के मध्य जो प्रश्नोत्तर है वो दर्शकों को बांध कर रखता है। निर्देशक दुबे जी अपने संपादकीय कौशल से एक कठिन विषय को बड़ी तरलता, सरलता से परोसते हैं, जिससे दर्शक जरा भी बोझिल नहीं होते। डॉ विनोद डेविड की कहानी "लौटते बसंत का प्रेम गीत" अपने आप में लालित्यमय है। विषय बड़ा ही बोल्ड है, एवम सन 70/80 के दशक के समांतर फिल्मों की याद दिलाता है। फिल्म के केंद्र में नारी की पीड़ाओं और संवेदनाओं को उभारा है। फिल्म का संगीत मधुर है और शांत सरोवर में कांकरी के फेंकने से उठने वाली लहरों जैसा हृदय पटल तक पहुंचता है, बधाई 'प्रणय प्रधान' जी को, सुमधुर सरगम हेतु। और हाँ, फिल्म जो मात्र दो पात्रों के का सार है, अभिसार है, दोनों ने अपनी भूमिकाओं में प्राण डाल दिए हैं, इस जीवंत, उत्कृष्ट प्रस्तुति हेतु आ इंद्रा कृष्णा एवम संजीव सेठ का कोटि कोटि अभिनंदन। फिल्म अनेक फिल्म फर्स्टवर्ल्स में नॉमिनेट हुई है,, यह फिल्म 7 सिस्टर नार्थ इण्डियन फिल्म फेटिवल में श्रेष्ठ निर्देशक मुकेश रामराव दुबे एवम श्रेष्ठ संवाद डॉ. विनोद डेविड प्राप्त कर चुकी है। फिल्म की पटकथा इंदौर की है, और फिल्मांकन भी इंदौर के ही इक रिजॉर्ट का है। फिल्म के प्रीमियर / स्क्रीनिंग के पूर्व श्रीमती सीमा डेविड ने स्वागत भाषण देकर संक्षिप्त में कथाकार डॉक्टर विनोद डेविड के बारे में बताया, और फिल्म बनाने की भूमिका रखी की आ डेविड साहब की अंतर्मन की इच्छा थी कि इस कथा पर फिल्म बने किंतु, कोरोना के काल ने उन्हें डस लिया। स्क्रीनिंग पश्चात छोटे पर्दे के सुविख्यात कलाकार आ सुशील जौहरी ने अपने वक्तव्य में लड्डू बाबा के बारे में बता कर उपस्थित सदन की आंखें जलपूरित कर दी, श्रीमती साधना जैन मांडावत ने अपने वक्तव्य में प्रेम को परिभाषित कर आ अमित सर एवम निर्देशक श्री मुकेश जी दुबे के प्रयासों की सराहना की। डॉक्टर अमित डेविड ने अंतर्मन से इसे अपने पिता को श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास बताया। मुझ अर्कींचन को भी दो शब्द कहने का अवसर दिया गया। मुकेश जी दुबे ने बड़ी विनम्रता से अपनी मां माटी को प्रणाम करते हुवे, सभी का आभार माना।

21 सृजन : शर्मा कालोनी, बड़वाह (खरगोन)
मो. न. 9926021858

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस

योग शिक्षण का एक बेहतर साधन है, जो विकसित होते हुए मरित्तिष्ठक एवं मन को समृद्ध करता है



महेश अग्रवाल

विश्व साक्षरता दिवस 8 सितंबर को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य व्यक्तियों, समुदायों और समाजों में साक्षरता के महत्व को उजागर करना है। शिक्षा विनम्रता, शील, शिष्टाचार, नैतिकता, चरित्र, त्याग और समर्पण आदि सिखाती है।

शिक्षा एवं साक्षरता से सकारात्मक विकास, कल्पना कीजिए कि पूरे विश्व के स्कूलों में गणित या विज्ञान की तरह योग पढ़ाया जाए तो क्या होगा? जब हम यह मानते हैं कि विश्व की साठ प्रतिशत जनसंख्या बच्चों की है तो परिणाम अवश्य अचंभित करने वाले होंगे। हर जगह युवाजन सुव्यवसिथत, स्वस्थ और खुश होंगे। वे संवेदनशील और समझदार, शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ, अपनी क्षमताओं के प्रति अधिक सजग और उनके कार्यान्वयन में अधिक समर्थ होंगे। अपने आध्यात्मिक अनुभव के कारण वे चेतना के उच्चतर स्तर पर कार्य करने में सक्षम होंगे। अपने इस अनुभव का उपयोग वे अपने बाह्य जीवन में, अपने व्यवसाय में और सामाजिक उत्तरदायित्वों में कर सकते हैं। योग सेवा के लिए प्रोत्साहित करता है, इसका उपयोग मानवता को लाभ पहुँचाने में किया जा सकता है। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में योग का समावेश करने पर वहाँ से बेहतर स्नातक बाहर आयेंगे जो अपने काम में अपनी बुद्धि का उपयोग अधिक सजगता से करेंगे।

युवा या वृद्ध, हर व्यक्ति को योगोन्मुख होना चाहिए। युवा वर्ग तथा सारे विश्व के भविष्य को योग जैसी प्रणाली की आवश्यकता होगी। योग का अर्थ है संगम और इसे हम वैश्विक स्तर पर प्राप्त कर सकते हैं – समस्त विश्व के लोगों का सौहार्दपूर्ण संगम। योग के माध्यम से हर व्यक्ति अपनी संस्कृति और अपने जीवन के बारे में ऐसी सूक्ष्म जानकारी प्राप्त कर सकेगा जो पहले उसके लिए अकल्पनीय थी। यह है योग की शक्ति। यह कोई धर्म नहीं है, बल्कि हमारी पहुँच के अंदर जीवन का विज्ञान है। यदि हम स्वयं को अपने और अपने बच्चों के भविष्य के प्रति उत्तरदायी मानते हैं तो हम यह सुनिश्चित करेंगे कि मनुष्य का विकास सकारात्मक दिशा में हो रहा है। तभी युद्ध बंद होंगे, तभी मनुष्य अपने साथियों से प्रेम करने योग्य होगा, तभी बुजुर्ग युवाओं को और युवा बुजुर्गों को समझ पायेंगे।

‘शिक्षा की बेहतर पद्धतियाँ’ – जैसा कि युगों से होता आया है, शिक्षा की नयी एवं उन्नत पद्धतियों की खोज जारी है। ऐसा लगता है कि योग के प्रकट होने और उसके प्रयोग से एक क्रांति होने वाली है। मरित्तिष्ठक के विभिन्न अंगों की क्रियाओं की वैज्ञानिक जानकारी से योग के उद्देश्य को और अपने जीवन में इन विद्याओं के कार्यान्वयन की आवश्यकता को समझते हुए चेतना के विस्तार को प्रोत्साहन मिला है।

मरित्तिष्ठक दो गोलार्द्ध में बैंटा हुआ है। प्रत्येक गोलार्द्ध का बिल्कुल पृथक् और भिन्न कार्य होता है। दायाँ गोलार्द्ध हमारे अस्तित्व के प्रज्ञा तथा अंतर्ज्ञान संबंधी पक्षों से सम्बद्ध होता है, जबकि बायाँ गोलार्द्ध बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक क्षमताओं से सम्बद्ध होता है। अब तक शिक्षा में बौद्धिक, वैज्ञानिक और तार्किक विषयों, जैसे पढ़ना, लिखना और गणित को महत्व देते हुए बायें गोलार्द्ध पर ही मुख्यतः ध्यान केंद्रित रखा गया है। कलात्मक और प्रज्ञात्मक विषयों, जैसे कला, नृत्य, संगीत तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों को आर्थिक रूप से तो नगण्य सहायता मिली ही है, स्कूल के शिक्षा कार्यक्रमों में भी वे उपेक्षित ही रहे हैं। शिक्षाविदों का मानना है कि हमारी ऐसी अभिवृति असंतुलित है, इससे शिक्षा अधूरी रहती है जो हमारे जीवन पर हानिकारक प्रभाव डालती है। संकुचित शिक्षण पद्धतियों के कारण शिक्षकों का अपने व्यवसाय की अंतरात्मा से संपर्क छूट गया है। वर्तमान पाठ्यक्रमों में लचीलेपन का अभाव है। वे हमें मानवता का पाठ नहीं पढ़ाते हैं, न ही जीवन की उन मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं जिनकी खोज हम सभी कर रहे हैं। शिक्षकों को किसी तरह शिक्षा के कलात्मक और अभिनयात्मक, सौंदर्यपरक और आध्यात्मिक पक्षों को अपने शिक्षण में सम्मिलित कर अपने

उत्तरदायित्व का विस्तार करना चाहिए। हम शिक्षकों ने बहुत लंबे समय तक व्याख्यानों, पाठ्यपुस्तकों, परीक्षाओं और परीक्षाफलों के पर्दे के पीछे स्वयं को सुरक्षित रखा है।

'संपूर्ण मस्तिष्क की शिक्षा -'शिक्षा व्यवस्था में बौद्धिक और प्रज्ञात्मक (मस्तिष्क के दायें और बायें भाग से संबंधित) दोनों मस्तिष्कों के समन्वयन के लिए ध्यान, योगासन, प्राणायाम, बायोफीडबैक इत्यादि के प्रभाव का अध्ययन किया है। मस्तिष्क के दोनों भागों के समन्वित होने पर सृष्टि की सृजनात्मक शक्तियों के संपर्क में आ जाते हैं अधिक ऊर्जा एवं सकारात्मकता का अनुभव करते हैं। 'योग - विकास का माध्यम -' छात्रों एवं शिक्षकों, दोनों की दृष्टि से योग शिक्षण का एक बेहतर साधन है, जो विकसित होते हुए मस्तिष्क एवं मन को समृद्ध करता है, अपने स्वभाव के द्विविध पक्षों— आंतरिक एवं बाह्य, बायें एवं दाहिने, अंतर्दर्शी एवं विश्लेषणात्मक — के बीच संतुलन स्थापित करता है, युवाओं को यथोचित लक्ष्य प्रदान कर उन्हें एक पहचान दिलाता है तथा जीवन को एक सही दिशा प्रदान करता है।

'स्कूली छात्रों के लिए शिथिलीकरण -'यौगिक पद्धतियाँ वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की त्रुटियों को दूर करने में मदद करेंगी। यह न केवल अच्छा आदमी बनने में मदद करेंगी, बल्कि हमें तनावमुक्त तथा एकाग्र बनाकर पढ़ने, लिखने और गणित सीखने जैसी मौलिक योग्यताएँ शीघ्र सीखने में भी सहायक होंगी।

साईं हिल्स कोलार रोड, भोपाल

कार्टूनिस्ट की नज़र से

हरिओम तिवारी



त्रैमासिक पत्रिका

रंग संस्कृति

विज्ञापन प्रति पृष्ठ दर सूची

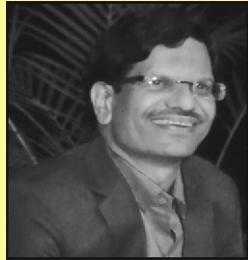
कलर कब्हर पृष्ठ अंतिम	-	30,000/-
कलर कब्हर पृष्ठ तीन	-	25,000/-
कलर कब्हर पृष्ठ दो	-	20,000/-
श्वेत श्याम एक पृष्ठ	-	15,000/-
1/2 पृष्ठ कलर	-	15,000/-
1/4 पृष्ठ कलर	-	10,000/-

चौथाई पृष्ठ से कम स्थान वाले विज्ञापनों के लिए रु. 40/- प्रति स्वायार से.पी. (ब्लैक एण्ड व्हाइट) तथा 60/- प्रति स्वायार से.पी. (कलर) की दर रहेगी।

प्रबंधक

शिव की श्रुंगारिता नगरी महेश्वर

पुनः प्रकाशित



हरीशा दुबे

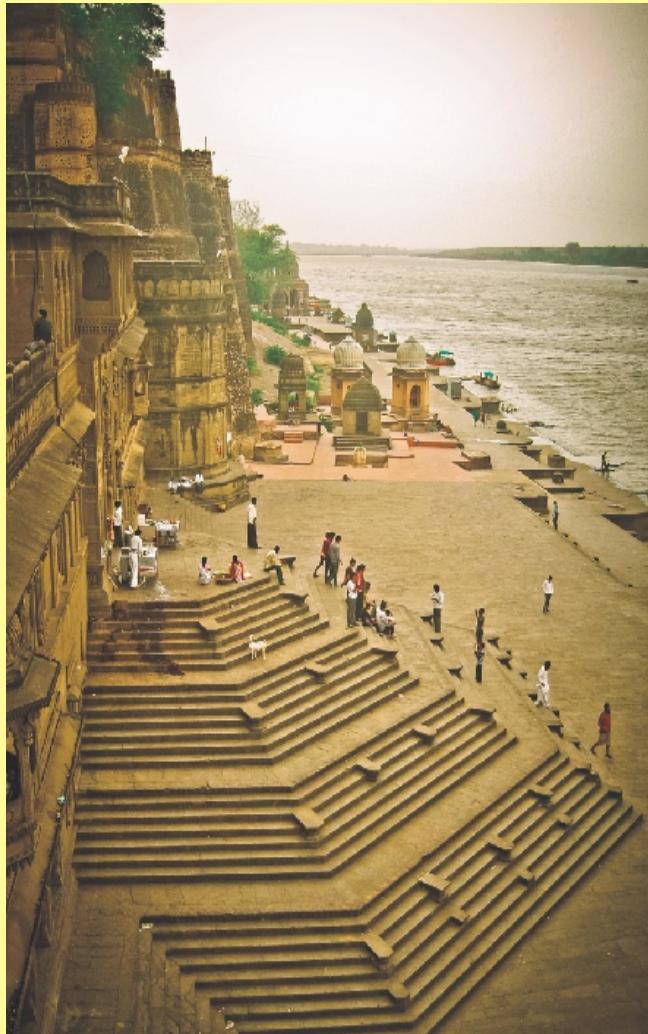
पतित पावन माँ नर्मदा के उत्तराखण्ड पर स्थित प्राचीन नगरी माहिष्मती (महेश्वर) महारानी अहिल्या बाई होल्कर की सुरम्य राजधानी है। प्रातः स्मरणीय देवी अहिल्या बाई होल्कर के द्वारा निर्मित सुन्दर शिवालय, मनोहारी घाट, नक्काशीदार छत्रियाँ एवं भव्य प्रस्तर किला महेश्वर के वैभवशाली अतीत की कहानी कहते प्रतीत होते हैं। प्रागैतिहासिक यह नगर धर्म और संस्कृति का केन्द्र रहा है। वर्ष भर यहाँ पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं का आगमन होता रहता है। महेश्वर की धार्मिक आस्था, समभाव संस्कृति एवं महेश्वरी साड़ियों के हुनरमंद बुनकरों ने इस नगर की प्रसिद्धि में चांद लगाए हैं।

मंदिरों की इस नगरी का

उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे महत्वपूर्ण धार्मिक ग्रन्थों में भी उपलब्ध है। वैभवशाली राजवाडे में देवी स्वरूप महारानी को प्रतिमा राजगढ़ी पर सुशोभित है। महेश्वर निवासी अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मूर्तिकार डी.जे. जोशी ने इसे गढ़ा है। प्रजा वत्सला, शिवभक्त, महारानी की श्रद्धा, धार्मिक आस्था यहाँ के भव्य शिवालयों से प्रकट होती है। रेवा के तट के कंकर भी शंकर कहे जाते हैं। महेश्वर के शिवालयों की अपनी महिमा एवं इतिहास है। इसीलिए हजारों भक्तगण यहाँ सदैव पुण्य श्रावण मास में शिव आराधना करने आते हैं। गुप्त काशी के रूप में प्रसिद्ध महेश्वर में नर्मदा स्नान शिव का रुद्राभिषेक बिल्व पत्र, अकाव के फूल एवं भांग से शिवलिंग का श्रृंगार होता है। प्रमुख शिव मंदिर इस प्रकार हैं। अहिलेश्वर मंदिर इस मंदिर में देवी अहिल्या की प्रतिमा, शिवलिंग, नंदी, गणेश, पार्वती की प्रतिमाएँ हैं, ऊपरी भाग में ओंकारेश्वर का पावन शिवलिंग है। राजराजेश्वर मंदिर— समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला भव्य मंदिर है। इसे सहस्रार्जुन का समाधि स्थल भी कहा जाता है। यहाँ ग्यारह अखंड नंदा दीपक आदिकाल से जलते हैं। दीप दर्शन से आरोग्य एवं समृद्धि की प्राप्ति होती है। मनोती पूर्ण होने पर यहाँ शुद्ध धी चढ़ाया जाता है।

काशी विश्वनाथ मंदिर — इस सिद्धेश्वर मंदिर के शिखर और विशाल स्तंभों पर आच्छारित मंडप सभा की शोभा नयनाभिराम है। यह क्षेत्र संत महात्माओं के लिए सिद्ध क्षेत्र रहा है। इस स्थान पर बैठ कर मन शांत आत्मलीन हो जाता है, साथ ही मनोबल बढ़ता है। मन की कामनाएँ पूर्ण करने वाले मनोकामनेश्वर हैं। यहाँ परम पूज्य संत स्वामी भक्तानन्द जी सरस्वती विगत 3 दशकों से शिवर्चन में लीन हैं। स्वामी जी ने गौरकामनेश्वर का अनशन किया था। स्वामी जी के अनेक शिष्य देश के सभी प्रांतों से शिवरात्रि एवं गुरु पूर्णिमा को यहाँ पहुँचते हैं।

पंढरीनाथ मंदिर — भगवान विष्वल एवं रुकमणी की सुन्दर प्रतिमाएँ हैं। प्रतिवर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा पर मेला भरता है। स्व. पुजारी विष्वल राव जागीरदार सा. के पश्चात उनकी सुपुत्री श्रीमती शकुंतला बाई पंढरीनाथ की सेवा में लगी हैं।



स्वामी रामेश्वरचार्य के सत् प्रयासों से भव्य आश्रम संचालित हो रहा है। यहाँ रामचंद्र डॉगरे महाराज का ट्रस्ट भी है। श्री वृद्ध कालेश्वर मंदिर – यह अति प्राचीन शिव मंदिर है। यह सिद्ध क्षेत्र रहा है, व केशव नारायण मंदिर के समकालीन कापालियों व तांत्रिकों का प्रमुख स्थान रहा है। यहाँ मनौती लेने से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है। यहाँ स्वामी भारती जी शिव आराधना में लीन रहते हैं। वर्तमान में राजस्थान के पच्चरे संत पूरे मास रुद्र का अनुष्ठान कर रहे हैं। नित्य प्रति अभिषेक होता है।

जालेश्वर मंदिर – आशुतोष महादेव का मंदिर एकांत में स्थित सिद्ध का प्रमुख स्थान है। प्राचीन शिव मंदिर का वर्णन पद्म पुराण व स्कंध पुराण में आता है। यह चमत्कारिक स्थल है। आराधक को शिव मुँह मांगा वर देते हैं। कालेश्वर मंदिर के पद्म पुराण के वर्णनुसार भगवान शिव की रमणीय स्थली है। यहाँ से त्रिपुरासुर का वध करने हेतु अग्निबाण छोड़ा गया था। मंदिर अति प्राचीन तथा भव्य है। यह स्थान एकांतवासियों के लिए उपयुक्त है। सच्चा भक्त, संत ही रात ठहर सकता है। इसके अतिरिक्त जालेश्वर मंदिर, विंध्यवासिनी भवानी माता का मंदिर, बद्रीनारायण मंदिर, श्रीकृष्ण मंदिर परम संतदास बाबा की श्रीराम कुटी जहाँ वर्तमान में 108 श्री महावीरदास जी साधना करते हैं। यूँ तो बारह महीने ही लोकिन श्रावण में विशेष रूप से ब्रह्म मुहूर्त से मंदिरों की घंटियों के साथ शंख ध्वनि आचार्यों संतों के वेद मंत्र हवा में गूंजने लगते हैं। बिल्व पत्र, हार, प्रसाद, श्रीफल बेचने वाले सक्रीय हो उठते हैं। 'बोल बम' का जय धोष करते हुए कावड़ यात्री प्रति सोमवार महेश्वर से अन्य स्थानों एवं उज्जैन, ओंकारेश्वर, द्रार, माण्डव की ओर पैदल रवाना होते हैं। स्थानीय व बाहर के कलाकार मंदिरों में सोमवार की रात भजन गायक रात्रि जागरण करते हैं। श्रावण में निराली है महेश्वर की छटा।

महेश्वर, जिला - खरगौन (म.प्र.)
मो. - 09993126478

रंग संस्कृति

रंगमंच, संस्कृति, साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका

रंग संस्कृति

डैली न्यूज़ पार्टल

www.rangsanskriti.com



देश-विदेश की सांस्कृतिक खबरें देश-विदेश तक

रंगदारी दर्शाती-लेन-देन की साड़ियां

पुनः प्रकाशित



हरि जोशी

जिसे बारात का अनुभव नहीं, जो घोड़ी कभी चढ़ा नहीं या जिसने भारतीय विवाह देखा नहीं, उसे तो निरा बन्द रही कहें? और बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद? ऐसे लोगों के सामने इन साड़ियों की कथा सुनाना भैंस के आगे बीन बजाने से अधिक कुछ नहीं है। खैर जिन्होंने वेलाव लशकर देखे हैं, वही ज्ञानी मालवा की पेरवानी के महत्व को समझते हैं। इस प्रथा का आविष्कार भारतीय महिलाएं ही कर सकती थीं और वे भी मालवा की शोधकर्ता, सो उन्होंने कर लिया। अमेरिका या इंग्लैण्ड की किसी महिला से आप उम्मीद नहीं कर सकते कि इस तरह के किसी भी रंगीन रस्म की खोज वह कर सकती है? न हींग लगे न फिटकरी रंग चोखा। कार्यक्रम की शोभा भी हरदम बनी रहे और साड़ी का रंग तो क्या बरसों बरस उसकी घड़ी तक न टूटे? देने वालों की हमेशा पौ—बारह रहे, वर्णी लेने वालों के बारह बजते रहें। मैं जिन साड़ियों की बात कर रहा हूँ वे कोई ऐसी वैसी साड़ियाँ नहीं हैं, शादी विवाहों की शान में चार चाँद लगा देने वाली होती हैं। वे न हों तो मालवा की कोई शादी सुचारू रूप से हो नहीं सकती। सर्वाधिक सुंदर वही होती है, डॉन की तरह रंगदारी दिखाती है। उनकी उपस्थिति से अच्छे अच्छों की बोलती बंद हो जाती है। उनके आने के बाद कोई कुछ बोल सकता है? वे पहिनने ओढ़ने के काम की भले ही नहीं होती होंगी किन्तु आकर्षक और दिखलौट इतनी कि बस अपने हत्थे चढ़े जायें? वे मात्र देने लेने के लिए होती हैं। वे तो हरसिंगार के फूल की तरह होती हैं जिसे बस देखते रहो और उसकी सुंदरी का आनंद लेते रहो। तोड़ दिया तो बिखर जायेगा। रिले रेस में जिस तरह एक खिलाड़ी दूसरे को डम्बल देकर रुक जाता है और दूसरा लेकर तीसरे को दे देता है। फिर तीसरा चौथे को देता है, इसी तरह देने लेने की साड़ियां अनवरत पास आँन होती रहती हैं। मैंने तो उन्हें कभी रुकते या फेल होते नहीं देखा। हाथों—हाथ ली जाती या दी जाती हैं।



भारतीय जानते हैं कि 1947 के पहले जब बांग्लादेश भी भारत का हिस्सा हुआ करता था, तब ढाका की मलमल प्रसिद्ध थी। कहा जाता है कि मलमल की पूरी की पूरी साड़ी सुई की नोक में से निकल जाती थी। किन्तु अब कौन उनके बात करता है? आज तो देने लेने की साड़ी दसों दिशाओं में चर्चित है और सचमुच उनकी बात कुछ और ही है। आज भी उनका दबदबा पूर्ववत्कायम है। कितनी पारदर्शी हो सकती हैं आप कल्पना भी नहीं कर सकते? ढाका की मलमल की साड़ी होती तो भी उनके सामने कहाँ ठहरती? देखने में अत्यंत आकर्षक और स्वभाव में एकदम छुईमुई। आपने घड़ी ताड़ी कि साड़ी घड़ी गिनने लगती है। एक बार पहन ली फिर दूसरी बार नहीं पहनी जा सकती। इसीलिये समझदार लोग उसे भेंट दर भेंट देते रहते हैं, रखयं पहन लेना शायद किसी शाप से ग्रस्त हो जाना माना जाता है। इंदौर, भोपाल, उज्जैन, आदि शहरों में तो बड़ी—बड़ी दूकानें इसी की कृपा से चल रही हैं। कई कम्पनियां इन्हीं के भरोसे खड़ी हैं। आश्चर्य नहीं की देश के कई अंचलों में इनका दबदबा कायम हो?

जबसे प्रेम विवाह या लिवइन रिलेशनशिप का चलन बड़ा है, मैं उन साड़ियों के बारे में चिंतित हो उठा हूँ। अब उन साड़ियों को कौन पूछेगा? जो उस माने में तोबड़ी खोज के बाद, बाजार बाजार भटकने के बाद, खरीदी जाती थी। पुराने लोगों को ही कोई नहीं पसंद करता तो अब पुरानी प्रथा को कौन पूछेगा? अब शादियाँ साड़ियों वाली न रहकर ताड़ियोंवाली या छिस्की और रमवाली हो गयी हैं। उन साड़ियों को भले ही कुछ नासमझ लोग रद्दी का माल मानते रहे किन्तु खरीदने वालों के लिए प्राण से भी प्यारी होती हैं। पहले तो वे बहुत तेजी से चलती रहती थीं। रमता जोगी, बहता पानी की तरह वे निरंतर चलायमान रहती थी क्योंकि बार बार खो कर दी जाती थी। खो—

खो के खेल की सर्वाधिक निष्णात खिलाड़ी होती थी।

विवाह का मौसम आते ही उन आभूषणों और उपहारों को अपने हाथ करने की होड़ लग जाती थी जो नई प्रजातियों की तरह, ठीक उसी प्रकार पहली बार देखी जाती थी जिस प्रकार अभ्यारण्य में कोई बेल—बूटेदार हिरनी दिखाई दे जाती है। दिखने में आकर्षक बस दर्शनीय। सहेज कर रखने योग्य। उपयोग दृष्टि से बेकार। कुछ दिन तक उसकी डिजाइन या बेलबूटों की खूब चर्चा होती। कम से कम सामने तो महिलाएं उस शोधकर्ता की प्रशंसा किये बिना न रहती, 'कहाँ से ढूँढकर लाई हो इस मूल्यवान मणि को?' 'अवश्य ही इंदौर के सांटा बाजार से लाई होगी?' ऐसी दुर्लभ और कीमती वस्तुएं, पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की निगाह में अधिक समाती हैं। उन्हें इतनी रास आती हैं कि निगाह में ही नहीं, दिल में ही उत्तर जाती हैं, जिन्हें वे हथियाए बिना कभी नहीं मानती। क्रय करने वाली टीम की प्रभावी महिला परस्पर तर्क वित्त सुनने के बाद अपना निर्णय दे देती है कि देने लेने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त यही साड़ियाँ हैं? भोपाल के चौक बाजार का, इंदौर के सांटा बाजार का या उज्जैन के गोपाल मंदिर के पास की दुकान का सेल्समैन जब शरीर पर डालकर दिखाता है तो वह दुल्हन से कम नहीं जंचता? दर्शक कहे बिना नहीं रहता 'कितनी जम रही है?' सस्ती सुंदर और टिकाऊ। टिकाऊ शायद इसलिए कि सदियों टिकी रहती हैं। सैल्समैन के ओढ़ने के बाद, कोई कभी उन्हें पहनता नहीं? कनेख की शादी में दी, खनेग के घर उपहार में टिकाई। ये लोमड़ियों की तरह किसी लूम से निकली हुई बेल बूटे दार धावक साड़ियाँ होती हैं? जो निरन्तर भागती ही रहती हैं और सिर्फ साड़ियाँ ही क्यों अन्य कई उपहारी कपड़े याने शर्ट पेंट भी इसी परम उद्देश्य से खरीदे जाते रहे हैं। बल्कि कई कम्पनियां इन्हीं के प्रताप से चल निकली हैं।

यह खरीदने वाले की मेधा पर निर्भर करता है कि किस चतुराई से वह उन्हें खरीदता है। उनमें कई कपड़े बहुत अनूठे होते हैं, वे व्हेनसांग और संघमित्रा की तरह दीर्घयात्रा करते रहते हैं, कई बार तो अश्वमेघ के घोड़े होते हैं जिन्हें कभी कोई रोकता नहीं। आज भी किसी भी दुकान पर चले जाइये जो सबसे मनमोहक और एक ओर अपनी विशिष्ट जगह बनाये हुए होंगे वे देने लेने के कपड़े ही होंगे। उन्होंने बड़ी प्रतियोगिता और संघर्ष के बाद शीर्ष स्थान पाया है, अब अपने स्थान से उन्हें कोई डिगा नहीं सकता। आसानी से टस से मस होने वाले नहीं हैं, ये देने लेने के कपड़े। इन कपड़ों को कभी कोई पहिनता नहीं, भगवान के मंदिर में जिस तरह हम प्रतिदिन हाथ जोड़ कर प्रणाम कर लेते हैं, ठीक वैसा ही शीर्ष सम्मान उन्हें हर घर में प्राप्त होता रहता है। धावक साड़ियाँ प्रेस की हुई यथावत और करीने से संभाल कर रख दी जाती हैं, जैसे किसी लॉकर में। और जैसे ही फिर किसी विवाह का निमंत्रण मिला कि रामबाण दवा की तरह तैयार रहती हैं। अपनी भूमिका निभाने को तत्पर। जब तक घर में दो चार देने लेने की साड़ियाँ रखी हैं चिंता की कोई बात नहीं रहती। आते रहे निमंत्रण पर निमंत्रण किस बात का डर? केवल उपहार दाता को इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि पूर्व पर्ची निकाल ली जाये जिसने अपना नाम लिखकर पहले वही साड़ियाँ या शर्ट पेंट दिए थे। यदि वे पूर्व के नाम नहीं निकाले गए तो उपहार दाता को प्राप्तकर्ता द्वारा निश्चित ही कहा जाएगा कि 'भैया तूने अच्छा नाम निकाला?' हाँ यदि कभी किसी संवेदनशील या अन्तर्रंग परिवार में देने लेने के कपड़े उपहार में दे दिये, वहाँ लेने के देने पड़ सकते हैं। भले ही आप, देना एक न लेना दो, की निश्चिन्तता वाला काम कर रहे हों, फिर भी आपको लेने के देने पड़ जायेंगे।

कई बार तो ऐसा पाया जाता है कि आठ साल पहले जिस किसी ने इन्हें विवाह में पैरावणी में चढ़ाया था, वही पारदर्शी साड़ियाँ दस बारह घर घूम कर फिर किसी पिरावनी में उन्हें ही उपहार स्वरूप वापस भेंट में दे दी गयीं। इतनी अच्छी तरह लपेटकर दी जाती हैं कि प्रथम दृष्ट्या उन साड़ियों की दीर्घ यात्रा का आंकलन करना असंभव होता है। लपेटने वालियों से कौन पूछ सकता है कई वे किस तरह सामने वाले को लपेट लेती हैं। स्पष्ट है दस बारह विवाहों में पिरावनी की शोभा ये बढ़ाकर, पर्याप्त अनुभव संपन्न होकर आयी होती हैं। तत्काल अनुभवी प्राप्तकर्ता भी साड़ियों को गले लगाता है चूमता है, और फिर मन ही मन आदेश देता है कि अभी तो और दस बीस घरों के चक्कर लगाना है। अंत में अमूल्य आभूषणों की तरह आलमारी में ताले चाबी में सुरक्षित रख दी जाती हैं। मुझे तो हमारे ऋषि मुनियों के चरैवेति—चरैवेति वाले सिद्धांत का अक्षरशः पालन करने वाली दिखाई देती हैं, ये देनलेन की साड़ियाँ।

3/32, छत्रसाल नगर, फेज-2,
जे के रोड, भोपाल - 462022 (मप्र)
मा. - 09826426232

रोटी

डॉ. कुंवर प्रेमिल



टूटी, राधेश्याम को लोगों ने अपने हाथों पर उठा लिया।

‘कमाल हो गया’ मुखिया जी अपनी जगह से उठ खड़े हुए।

‘हीरा है राधे’ नीम वाले दादा चिल्ला पड़े।

‘कोई तोड़ है राधे का?’ चक्की वाले दादा भी अपनी फटी चिथी अचकन की जेब से चिल्लर निकालकर हवा में उछालने लगे।

‘तोड़ क्यों नहीं है? रेशमिया बीच में ही चिल्लाई।

‘आज राधे को मेरे साथ नाचना होगा। हार जीत का फैसला मुखिया जी करेंगे। इस गांव में कोई एक ही नाचेगा, राधे या फिर मैं, रेशमिया ने अपनी शर्त जड़ दी थी।

‘राधे की हार से गांव की रौनक चली जाएगी, शमशान हो जाएगा पूरा गांव। राधे की कला दम तोड़ देगी। सब कुछ टूटकर बिखर जाएगा।’ ‘चक्की वाले दादा बुरी तरह हाँफ रहे थे।

‘मंजूर है, मंजूर है’ – राधे ने रेशमिया की शर्त मान ली थी।

‘राधे ने चूँड़ियां पहन रखी है क्या? गांव के लड़के चिल्लाये।

फिर क्या था, आनन फानन वाद्य यंत्र तैयार किए जाने लगे। देखते ही देखते संगीत की स्वर लहरियां फिजा में रंग बिखरने लगी। संगीत और नृत्य के मनभावन दृश्य से समूचा परिदृश्य बदलने लगा। मुकाबला जमने लगा। एक गीत राधे का नृत्य के साथ। फिर रेशमिया ने दिखाया अपना जलवा पूरी मुस्तैदी के साथ, लोकगीत, नृत्य की छटा पूरी तरन्नुम के साथ। संगीत और नृत्य का पूरा पूरा सामंजस्य, जन समूह की तालियों की गड़गड़ाहट के साथ निशा जादू बिखरने लगी थी। दोनों के ही मोहक अंदाज ने कामदेव को भी पीछे छोड़ दिया था। जनसमूह मानो जड़ हो गया था। भोर का तारा कब उगा पता ही नहीं चल सका था।

‘मैं झूम के नाची आज कि घुंघरू टूट गए... घुंघरू टूट गए’। रेशमिया फिल्मी धुन पर थिरक रही थी।

आगे—आगे रेल चले पीछे से ठेला
तुम ठहरे चार यार, मैं हूं अकेला
चंदा चकोर, नेहा लगन दो
चंदा चकोर नेहा लगन दो।

गांव की चौपाल में संगीत और नृत्य की महफिल जमी थी। राधेश्याम अपनी टीम के साथ नृत्य विभोर था। रेल का इंजन बना था राधे, बाकी टीम बनी थी रेल के डिब्बे— छक छक—छुक छुक—छक—छुक। राधे ने तान छेड़ी ढोलकिया और मृदंगिया साथ हो लिए। पैर थिरकने लगे। ढोलक पर थाप पड़ी, वाद्य स्वर उभरे, संगीत की लहरियां ऊँचाइयां छूने लगी। लोकगीत—लोक संगीत, लोक नृत्य ने ऐसा समा बांधा कि पूछो मत। तालियों की गड़गड़ाहट में आकाश गुंजा दिया। अंततः लय

उधर राधे—‘मैं हूं वनफूल, वन का फूल... मैं जो चला जाऊं... बहार चली जाए.. मैं हूं वनफूल..

..वन का फूल. राधे एक पैर के बल पर नाच रहा था. पूरा वातावरण जीवंत हो उठा था।

चरम पर पहुंचते—पहुंचते समय थम गया था। वाद्य यंत्रों को बजाते बजाते हाथ में छाले पड़ गए थे। जनसमूह मस्त हो गया था। नृत्य और संगीत की चरम परिणति थी यह आवेश और आवेग दोनों के पास था। दोनों मजे हुए कलाकार थे। दोनों की अपनी—अपनी अदाएं थी। दोनों भी बेजोड़ एक से बढ़कर एक थे।

तभी रेशमिया ने उछाल भरी, उसके पैर फिसले और वह ओंधे मुंह जा गिरी। घुंघरू टूट गए, संगीत ने दम तोड़ दिया। वाद्य यंत्र निष्क्रिय हो गए। संगीत की लहरियां टूट कर बिखर गई। साजिंदे जवाब दे गए।

नृत्य में अवरोध आ गया। राधे टूटे पंख के पखेरु सा जमीन पर आ गया मानो। पहले रेशमिया गिरी फिर राधे, दोनों के ही नंबर हो गए आधे आधे। ना कोई जीता ना कोई हारा।

रेशमिया ने उठकर अपने गले का हार राधे को पहना दिया। मानो फैसला हो गया। नृत्यांगना को मिली थी करारी हार। राधे मुकाबला जीत गया था। नृत्यांगना का घमंड चूर चूर हो गया था।

राधे अभावग्रस्त था तो क्या हुआ। उसमें अभी जमीर बाकी था। वह समझ गया था कि यह उसकी मुकम्मल जीत तो कदापि नहीं हैं। वह अपनी कला को जीत हार के तराजू पर तौलने के बेहद खिलाफ था। यह अलग बात थी कि उसने रेशमिया की चुनौती को हंस कर कबूल किया था।

उसने त्वरित गति से रेशमिया का हार उसे वापस कर दिया। वह फिर शीघ्रता से अपने घर लौट भी गया। घर में उसका बूढ़ा दादा उसकी राह देख रहा था।

‘बाबा ओए बाबा’ गलियारे से ही राधे ने अपने बाबा को पुकारना शुरू कर दिया था। उसका बाबा उसके बगैर रोटी खाता ही कब था। उसे बाबा आंगन में रोटियों पर औंधा पड़ा दूर से ही दिखाई दे गया था।

कुत्ते बिलियों से रोटियां बचाने का यही एकमात्र उपाय ही तो था उसके पास। अंधे बाबा की लाठी उसके पास ही पड़ी मिल गई।

‘सो गया क्या बाबा?’ राधे ने कंधे से पकड़कर अपने बाबा को हिलाया। पर बाबा यहां हो तो बोले। बाबा तो हमेशा हमेशा के लिए छोड़ कर कूच कर गया था। राधे के मुंह से एक दर्दनाक चीख निकल पड़ी थी। पूरा गांव आनन—फानन में उसके आंगन में आकर जमा हो गया था।

तो क्या, पूरी रात भूखा ही नाचता रहा था राधे। यह तो उसकी आदत में शुमार था। उसे भरपेट रोटियां मिली ही कब थी।

माता पिता उसके जन्म लेने के बाद ही परलोक वासी हो गए थे। दादी भी कुछ दिनों बाद चल बसी थी और आज बाबा भी अनंत यात्रा पर चले गए। अब नृत्य और संगीत ही उसके जीवन में शेष रह गए थे।

घर काटने दौड़ता था। संगी साथी, नदी पोखर उसे काटने दौड़ते, वह पूरी तरह अस्थिर होकर रह गया था। वह खाली जेब खाली पेट शहर पढ़ने आ गया था। गांव वालों ने राशन, नून तेल का इंतजाम कर दिया था।



रेशमिया ने कुछ रुपए जबरन उसकी जेब में डाल दिए थे।

शहर का हाल भी कुछ अच्छा नहीं था। रोटी के लिए यहां भी जद्वोजहद थी। गांव विपन्न था तो क्या हुआ स्नेही तो था। यहां शहर में उसे पूछने वाला कौन था भला?

स्नेही तो था। यहां शहर में उसे पूछने वाला कौन था भला?

यहां के सिनेमा हॉल में फ़िल्में आती... आधी रोटी... डेढ़ रोटी.. तांगे पर फ़िल्म का विज्ञापन होता... कुंदन ने रोटियां चुराई... कुंदन जेल गया... कुंदन... कुंदन... कुंदन। शहर की सड़कों पर न जाने कितने कुंदन मुंह लटकाए भूखे पेट धूमते रहते। रोटी नसीब नहीं होती। उसे लगता कि वह भी किसी दिन इन कुंदनों में शामिल हो जाएगा। उसके साथ उसकी यह कलाएं भी दम तोड़ देंगी। उसका ऐसा हश्र क्यों ना हो, एक जमाने से रोटी बनी है एक सवाल, चालीस रुपया किलो शक्कर, अस्सी रुपया किलो दाल ऐसे में जीना हुआ मुहाल। राधे चाहे किसी जमाने का हो रोटी बनी बवाल।

सब जगह रोटी की हाय हाय, रोटी जो न कराए थोड़ा, प्रतिभा के लिए रोटी बनी रोड़ा। रोटी के लिए मारामारी, रोटी के लिए खून, रोटी बनी अफलातून। रोटी बड़ी ठकुर सुहाती है। रोटी ही आदमी को खा जाती है।

राधे के लिए गांव और शहर दोनों एक जैसे थे। रोटी यहां भी नहीं, वहां भी नहीं थी। रोटी उसे तरसाती थी, भरमाती थी। वेदनामय जीवन के उत्तार-चढ़ाव सिखाती थी। उसे जवानी के सपने नहीं, सपने रोटी के आते थे। रोटी के पेड़, बेले-कोंपलें—पत्ते, पर हकीकत में इतनी रोटी कहां मिलती। जो भरपेट जीम लें।

किताबें पढ़ते पढ़ते अक्षर रोटियों की शक्लें अस्तियार कर लेते। कमरे की दीवारों पर रोटियां लटकी दिखाई दे जाती। रोटी की छत, रोटी की फर्श, बिना रोटी के उसके पेट की आंतें कुलबुलाती रहतीं।

रोटी भूखे की सबसे नजदीकी रिश्तेदार होती है। मांग कर खाई रोटी अहम को चोट पहुंचाती है। रोटी का मारा लहूलुहान हो जाता है। यह लहू अंदर ही अंदर रिसता है। तन और मन दोनों को घायल करता है। रोटी का दर्द उसे ताउप्रत तड़पाता है। स्वाभिमान को गिरवी रख देती है रोटी, सच पूछो तो बड़ी खुदगर्ज होती है रोटी। रोटी के लिए आदमी विदेश जाता है। अपनी जान पर खेल जाता है। हिंदुस्तानी नायक कुंदन हो या पाकिस्तानी आतंकवादी कसाब। दोनों पर है रोटी का दबाव। रोटी एक सवाल है तो रोटी ही उसका जवाब है। रोटी राधे को भूखे पेट नचाती। रोटी ही जख्म देती, रोटी ही उसे मलहम लगाती। रोटी पानी की आस में वह कलास दर कलास आगे बढ़ता गया। राधे रोटी से बिना हथियार के ही लड़ता गया। एम एस सी करते करते वह रोटी की सटीक व्याख्या करना सीख गया राधे।

राधे ने रोटी की गणितीय परिभाषा निम्नानुसार दी। 'रोटी ही व्रत, व्यास और परिधि है। रोटी की परिधि पृथ्वी की परिधि से भी बड़ी है।'

'रोटी ही सरल रेखा, वक्र रेखा, जीवन रेखा है, उससे बड़ी कोई रेखा नहीं है।' 'रोटी अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित है पर रोटी का गणित ही सबसे कठिन गणित है।' 'रोटी त्रिभुज, चतुर्भुज, पंचभुज, बहुभुज है। कुल मिलाकर ऑक्टोपस है रोटी। जिसकी गुंजलक में फस कर आदमी दम तोड़ देता है। रोटी के अभाव में अपना सिर फोड़ लेता है। अपने ही कॉलेज में गणित विज्ञान का प्रोफेसर बन गया था राधे। उसने अपनी डायरी में लिखा—'बेर्डमान के लिए रोटी के मायने कुछ और है।' उसे रोटी के साथ सोना चांदी, जमीन जायदाद, काला—पीला धन सभी कुछ चाहिए। भूखा इन्हें खाता जाता है फिर भी उसकी भूख में इजाफा होता जाता है। उसके लाकरों में अकूल संपदा भरी होती है। उसके पास अपने आप चली आती है रोटी। सच बड़ी दगाबाज होती है रोटी। साहित्य, कला, संस्कृति सभी रोटी के पास गिरवी रखी होती हैं।' अब अकेला नहीं था राधे। चिरंजीवी बनाने के लिए एक कलब की स्थापना भी कर डाली उसने राधे का नेहा लग गया था रुचिका से, तभी तो प्यार का नेहा बरसने लगा था। उसे अब विश्वास हो गया था कि रुचिका की बेपनाह मोहब्बत उसे रोटियों से मेहरूम नहीं करेगी। भरपेट रोटी जीमने को मिलेगी तब वह फिर अपना गांव वाला गीत कलब में पूरे ठाठ से गाएगा।

आगे—आगे रेल चले, पीछे से ठेला

तुम ठहरे चार यार, मैं हूं अकेला

चंदा चंकोर नेहा लगन दो

संपर्क -एम आई जी 8, विजय नगर जबलपुर,
मध्य प्रदेश 482002, मो-9301822782

म याने मक्खन का



सुनील चौरे 'उपमन्यु'

मक्खन नाम सुनते ही मुँह में पानी तो आता ही है, साथ प्रभू श्रीकृष्ण जी की याद आ जाती है कैसे प्रभू कृष्ण जी हांडी को फोड़ मक्खन खा जाते थे।

आज तो खाने से ज्यादा मक्खन लगाने की प्रक्रिया संचालित हो रही है। बिना मक्खन के कोई काम हो ही नहीं पाता। आप मेरे यदि मक्खन लगाने की कला है तो आप का काम कहीं से कहीं तक रुक ही नहीं सकता। अर्थात् आपके द्वारा लगाया गया मक्खन सामने वाले को इतना प्रभावित कर देता है कि वह मक्खन के वशीभूत हो कर ही कार्य कर देता है।

मक्खन लगाने वाला सब की आंखों का तारा भी होता है, या यूं कहें कि सितारा भी होता है, जिसे मक्खन

लगाया जा रहा है वह कितना भी कठोर हो, नियमों का पालन करने वाला हो, किन्तु मक्खन लगाने वाले का इतना ऋणी हो जाता है कि – वह उसके ऋण से मुक्त ही नहीं हो पाता है।

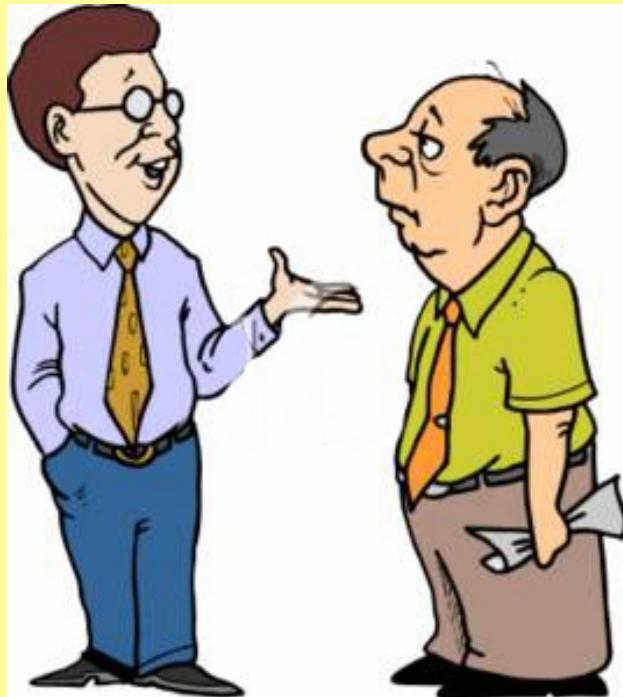
बबू भैय्यू बहुत चिंतित व दुःखी रहते थे कि मुझे कोई पूछता नहीं है और गब्बू भैय्यू को सब पूछते हैं। सारे अधिकारी, कर्मचारी, नेता, गब्बू भैय्यू-गब्बू भैय्यू की रट लगाए रहते हैं। एक दिन बबू भैय्यू ने पूछ ही लिया –गब्बू भैय्यू जे बताओ कि ये सारे अधिकारी, कर्मचारी, नेता, तुम्हारी ही माला क्यों जपते रहते हैं जबकि तुम न तो कम्प्यूटर जानते हो, न टाइप जानते हो, न किसी मेरे रुझान है, न ही कुछ करते हो बस कुर्सी को तोड़ा करते हो, मक्खन लगी बाते छोड़ा करते हो, तुम्हे कोई कुछ कहता नहीं क्या ?

गब्बू भैय्यू बोले—मक्खन के आगे किसकी ताकत जो खोले हमारा ढक्कन। मक्खन का कर्ज चुकाने हेतु इन्हें चुप रहना ही पड़ता है। भैय्या बबू जी आप भी मक्खन लगाने की कला में हमसे प्रशिक्षण ले कर निपुण हो जाओ और छा जाओ पूरे ब्रह्मांड पर !

समय का चक्र चलता रहा। समय गुजरता रहा। बबू भैय्यू होते गए पिछु और पिछु के लोग होते गए अग्गु। एक दिन बबुआइन बोली—इत्तो अकड़नू अच्छी बात नहीं। सबसे मेल मिलाप रखके, स्वाभिमान रख के थोड़ो मक्खन लगाई दियो तो तुम्हरो कछु नी बिगड़े, उल्टो तुम्हरो काम ही सुधरेगो, तुम्हरी आवभगत होगी, तुम्हरो नाम होगो, तुम्हरो सम्मान होगो।

बबुआइन की बात सुन बबू भैय्यू ने स्वाभिमान रखते हुए एसो मक्खन लगानो चालू कियो की गब्बू भैय्यू चारों खाने चित्। आज शासन, प्रशासन, नेता, अभिनेता, क्रेता विक्रेता, लेता—देता के बीच भोत ही इज्जत हो गयी अब लोगन की जिबान पर एक ही नाम बबू भैय्यू—बबू भैय्यू।

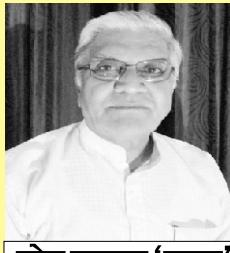
एक दिन अपने सम्मान समारोह में बबू भैय्यू बोले—जो परहेज करें मक्खन से वो तो ढ याने ढक्कन के। जो चाट चाट खूब लगाए, वो तो पास हो जाए मक्खन के।



सम्पर्क : 24, जवाहरगंज वार्ड रामेश्वर रोड, खण्डवा (म.प्र.)

मो. : 9926496988

વિક્રય હેતુ રચા નહીં હૈ



સુદેશ કુઠાવાહ 'તન્નાય'

મૈને અપની રચનાઓં કો
વિક્રય હેતુ રચા નહીં હૈ
ફિર ભી મોલ લગાઓગે ક્યા?
જરા સુન્નું તો!

ગહન મનન—ચિંતન સે ઉપજી
બડે જતન સે ઇન્હેં સેવારા
સત્યનિષ્ઠ યે સહનશીલ
નિષ્પક્ષ, નિર્દલીય સમરસ ધારા
સુખ અવ્યક્ત દે, જબ ભાવોં કો શબ્દ—શબ્દ
સાકાર બુન્નું તો।
ફિર ભી મોલ લગાઓગે ક્યા?
જરા સુન્નું તો!

મેલે—ઠેલે બાજારોં મેં
નહીં પ્રદર્શન કી અભિલાષા
કરે ઉજાગર સમય સત્ય કો
શિષ્ટ, વિશિષ્ટ, લોકહિત ભાષા,
અન્તસ્ક કા તબ તાપ હરે
જબ કાવ્ય પથિક બન
ઇન્હેં ચુન્નું તો।

ફિર ભી મોલ લગાઓગે ક્યા?
જરા સુન્નું તો!
કરુણા, દયા, સ્નેહ મમતા શુચિતા સદ્ભાવોં સે વંચિત
હૈ
કહો! કાવ્ય કે સૌદાગર
કિટના ઝોલી મેં ધન સંચિત હૈ
હૈ અમૂલ્ય યહ સૃજન ધરોહર
પઢ़—પઢ़ ઇનકો
ઔર ગુન્નું તો!
ફિર ભી મોલ લગાઓગે ક્યા?
જરા સુન્નું તો!

તુમને દિએ પ્રશસ્તિપત્ર—નારિયલ,
ઉદ્ઘાયે શાલ—દુશાલે
પર મન હી મન દાતા હોને કે
ગર્વિત બ્રમ, મન મેં પાલે,
ઐસે સમ્માનોં કે પીછે છિપે ઇરાદે જાન, અગર મૈં શીષ
ધુન્નું તો
ફિર ભી મોલ લગાઓગે ક્યા?
જરા સુન્નું તો!

226, માં નર્મદે નગર, બિલેહરી, જબલપુર (મ.પ્ર.),
મો. : 9893266014



સંદીપ સૃજન

સમજા હમેં ઉનને કિર્સી
બાજાર કી તરહ
વો હર દફા મિલે હૈ ખરીદાર
કી તરહ

હમસે મિલે વો સુબહ કે
અખબાર કી તરહ

ઉનકો લગા કિ હમ હૈ સમજદાર કી તરહ

કોઈ તલબ નહીં હૈ ન લાલચ હૈ કોઈ ભી
લેકર બહાના આતે હૈ હર બાર કી તરહ

એક ગુજલ

કાટી હૈ ઉમ્ર સારી જિનકે ઇંતજાર મેં
આયે વો જિંદગી મેં હૈ ઇતવાર કી તરહ

જબ ભી મિલે વો ઇતની મુહૂબત લુટા ગયે
લગને લગે હૈ વો હમેં અબરાર કી તરહ

ઉસકી દુઆએં હમ પે કભી કમ નહીં રહી
પર હમ રહે સદા હી તલબગાર કી તરહ

એ-99, વિક્રમાદિત્ય ક્લોથ માર્કેટ, ઉજ્જૈન (મ.પ્ર.)
મો. : 9406649733

नीला हरा डब्बा की कचरा की गाड़ी



सुनील चौरसी 'उपमन्यु'

सम्पर्क : 24, जवाहरांज वार्ड
रामेश्वर रोड, खण्डवा (म.प्र.)
मो. : 9926496988

नीला हरा डब्बा की कचरा की गाड़ी,
खड़ी थारा दरबज्जा का अगाड़ी ।

नीला हरा डब्बा की
कचरा की गाड़ी...
भुनसारा आवे न
हरण बजावे
कचरों डालो गाड़ी मे,
सब ख बुलावे,
सुखो गिलो कचरों
अल्लग कराड़े
नीला हरा डब्बा मे
फिरी डलाड़े,
आलेंग वलेंग
मत कचरों तुम फेंको,
हाथ जोड़ी कय —
श्यामा की लाड़ी ।

नीला हरा डब्बा की
कचरा की गाड़ी...
धूनिवाला दादा, किशोर कुमार दादा,
साहित्य साधक माखन दादा को
स्वच्छ शहर आय,
बड़ा छोटा सब न ख खोबज भाय,
चाहे जहाँ थूकी न,
झुकाओ मत भाल
शहर की आन बान देखो टाउनहाल,
रखो शहर सुंदर,
जसो राखोज घर
शहर की जान छे देखो घण्टाघर,
हर काम की शुरुवात यहाँ सी होय
कचरा गाड़ी म तुम कचरों डालजो
हाथ जोड़ कय देखो अनाड़ी ।

नीला हरा डब्बा की
कचरा की गाड़ी...

नौका



राम शर्मा परिंदा

मनावर जिला धार मप्र
मो. : 7869196304

बैठने में सार नहीं होता
और एतबार नहीं होता

छेद वाली नौका पर
कोई सवार नहीं होता

गर गलती से बैठ जाए
तो फिर पार नहीं होता

निंदक के मन में कभी
नया विचार नहीं होता

जोड़ खूब दो और एक
वो कभी चार नहीं होता

'परिंदा' कहाँ बैठता यदि
विद्युत तार नहीं होता ॥



राकेश गीते 'रागी'

जी लो हँसी-खुशी जीवन दो पल की जिंदगानी है !!

किसने अपने जीवन के
दुख - दर्दों को सीया है
क्षणभंगुर यह जीवन
कौन युगों तक जीया है
माटी की यह देह हमारी
माटी में मिल जानी है
जी लो हँसी-खुशी जीवन
दो पल की जिंदगानी है !!
कितने रोज जन्मते जग में
और कितने ही मर जाते
खिलते सुंदर सुमन सुबह
सूरज ढलते ही झार जाते
हर रात पूनम की न होती
अँधेरी मावस भी आनी है
जी लो हँसी-खुशी जीवन
दो पल की जिंदगानी है !!

10 मास्टरकालोनी, खण्डवा
मो. - 99268-16530

પુનરાગમન હૈ...



જ્યેષ પણે

ઇસે ક્યું કહતે હો બુઢાપા
યે તો પુનરાગમન હૈ મેરે બચપન કા
બચ્ચે હી સહી
પકડ હાથ ચલાતે હૈનું મુઝે
રોટી ના સહી
દવાઈ કહ કહકર ખિલાતે હૈનું મુઝે
કભી—કભી મચલ જાતા હું
ખો ભી જાતા આપા
ઇસે ક્યું કહતે હો બુઢાપા
યે તો પુનરાગમન હૈ મેરે બચપન કા |
સિર મેં છિતરે છિતરે બાલ
મુંહ પોપલા સા
લગતા દૂધ કે દાંત આને વાલે
હર પલ મેરા ધ્યાન રખતે ઘરવાલે
ક્યું કહતે બુઢાપા જમાને વાલે
યે સવાલ પાંચ કા હૈ યા પચપન કા
યે તો પુનરાગમન હૈ મેરે બચપન કા |
મન કરતા બાહર જાઊં
ટહલું દગડે મેં મિત્રો મેં સમય બિતાડું
પર અબ ભી ટોકા ટોકી બીચ
કર્ફ બંદિશો રહતી હૈનું
ઘર કી હર જિહવા મુઝસે કહતી હૈ
નહાના ધોના બુરા લગતા તન કા
ક્યું કહતે હો બુઢાપા ઇસે
યે તો પુનરાગમન હૈ મેરે બચપન કા |

મામૂલી યાદે



વિવેક મુદુલ

આધી રાત કો દિખતે હૈનું બાબૂજી
બિલ્કુલ બાબૂજી કી તરહ
પટ્ટે કે પાયજામે ઓર કર્ફ છેદોં વાલી
પીલી સી બનિયાન મેં
હાથ મિર કે પીછે બાંધે
વો તેજ તેજ નાપતે
છોટે સે બરામદે કી સરહદ
બુદ્બુદાતે હુએ
'મુન્ના' નહીં લૌટા અબ તક
આજ માંગના હી હૈ શાદી કે લિએ
ગહના—રૂપૈયા
આખિર વહી તો હૈ બડુંકી કા ઇકલોતા મૈયા..
અમ્મા તો અક્સર દિખતી હૈ
બાબૂજી કે પૈર દબાતી
દીદી કી શાદી કી બાત ચલાતી
સહસા કિસી બાત પર
દોનોં કે બીચ પસર જાતા સન્નાટા
સીલિંગ ફેન કી ચિંચિયાતી આવાજ
સિસકિયોં સી લગતી
કરાહને લગતા દીવાર ઘડી કા સૈકેંડ કાંટા
ફિર આંખે પોંછતી અમ્મા
ઠાકુરજી કી ઓર જાતી દિખતી હૈ
ઔર મેરી આંખોં કે કોરોં સે
કોર્ફ ટીસ પિઘલતી હૈ
આધી રાત કે ખ્વાબોં કી બસ યહી બાત એક
અખરતી હૈ
ભૂલને વાલી મામૂલી યાદેં
બાર—બાર ઉભરતી હૈનું |

કર્મચારી કાલોની, ગંગાપુર સિટી
જિલા-સવાઈ માધોપુર (રાજ.) 322201
મોબાઇલ નંબર : 9549165579

લેખક માખનલાલ ચતુર્વેદી પત્રકારિતા
વિશ્વવિદ્યાલય મેં ઉપર્યુક્ત કે પદ પર કાર્યરત હૈ।
મો. : 9111891853

વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ



વિજય વિશ્વકર્મા

જાંગલ મેં

જિતને ભી હૈનું 'બોઝા' હમેશા, અપને સર પર ઢોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

હો કેસી ભી રાત મગર, સબસે પહલે ઉઠ જાતી હૈ |
ઘર કી હર જરૂરત કો પૂરા, કરને મેં જુટ જાતી હૈ |
જાને કિતની કરવટ લેતી, તબ જાકર વો સોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

કહાં મિલી હૈ ફુરસત ઉસકો, અપના જશન મનાને કી
આદત સી પડ ગઈ હૈ ઉસકો, અપના ધર્મ નિભાને કી
ના સોના ના ચાંદી તન પર, ના હીરા ના મોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

દાનવતા કા કયા હૈ વહ તો, હર દિન પૈદા હોતી હૈ |
લેકિન ઉસસે ટકરાને કી, ઉસમેં ક્ષમતા હોતી હૈ |
માનવતા કે ફલ હોં જિસમેં, ઉન બીજોં કો બોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

ના ડર-ડર કરકે જીતી હૈ, ના મર-મર કરકે જીતી હૈ |
જિતના જીવન મિલતા ઉસકો, મેહનત કરકે જીતી હૈ |
જબ દેખો જબ હંસતી રહતી, પતા નહીં કબ રોતી હૈ!
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

જીત સકી ના ભલે કભી પર, કભી ના ઉસકી હાર હુઈ
ભલે કભી ના ભૂલે સે ભી, ઉસકી જય-જયકાર હુઈ
ઉસકો તો સુખ તબ મિલતા જબ, ઔરાં કે દુખ ધોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

નૌ દિન તો હૈનું 'મહારાની' કે, દસવાં દિન ફિર ઉસકા હૈ
ના ઉસકી કોઈ પૂજા-અર્ચન, ના હી વિસર્જન ઉસકા હૈ
વો હી અપના સદા 'હવન' હૈ, વો ખુદ અપની 'જ્યોતી' હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

બહુત કઠિન હૈ હાડ-માંસ કી, જિંદા દેવી બન જાના
જિંદા હી કુછ કર પાતી હૈ, ઇસ દુનિયા કો સમજાના
ખોકર સબ કુછ પા લેતી જો, પાકર સબ કુછ ખોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

ક્યા દેખો 'બકવાસ' જહાં પર, બકવાસોં કે ઢેર લગે
ક્યા કરલે 'ઉપવાસ' જહાં પર, ઉપવાસોં કે ઢેર લગે
ઉસકે 'જશ' ભી ગાલે જિસકી, અપની હી ધુન હોતી હૈ |
વહી તો દુર્ગા હોતી હૈ ||

જબલપુર મો : 97701276579

સંગ્રામ



દીપક ચાક્રે

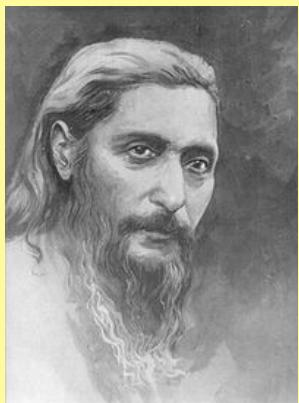
યારી હૈનું, છોટી હૈનું,
જિન્દગી કહું આરામ કી |
જીવન એક રણભૂમિ,
બાત હૈનું મહા સંગ્રામ કી ||
કમાન, તરકશ નહીં,
કહું છૂપા રખ્યે હૈનું બાણ |
છોટા મુંહ, બડી બાત,
લમ્બી-લમ્બી હોતી જબાન ||
અમૃતત્વ કી લાલસા,
ગગન ગામિની ઉડું ચલા હૈનું |
ક્યા મૃત્યુ પર વિજય પાને,
અમૃત પ્યાલા પીને ચલા હૈનું ||
ફરેબ રથ પર હુઆ સવાર,
મોહ, માયા, લોભ કે ઘોડે |
ઝૂઠ કા બૈઠાકર સારથી,
ઝૂઠ પ્રપંચ કે બાણ છોડે ||
આઁખોં મેં ઘમંડ કા પારા,
ઘમંડ કી જલાકર હૂક |
ઓરાં કે કંધો સે,
નિશાના લગતા અચૂક ||
કપટી જાલ બિછાકર,
નિર્દોષોં કી ચિતા જલાતા હૈનું |
હાય! લેતા માસૂમોં કી,
બેરંગ ફૂલ ખિલાતા હૈનું ||
જમીર બેચા, ઈમાન બેચા,
બન ગયા ફૂલજી ફટાકા |
જીને કી ઝૂઠી શાન મેં,
અધર્મ કી પતાકા લહરાતા ||
અપને હી અપનો કો,
માત દેને મેં ખૂબ લગા હૈનું |
રોમ રોમ મેં ફરેબ,
રાગ રાગ મેં કૈસે દગા હૈનું ||
ચિત્કાર કરતી બેટિયાં,
માં કી મમતા રોતી હૈનું |
બન્દ કરો યેં સંગ્રામ,
માનવતા ક્રંદન કર રોતી હૈનું ||

સમ્પર્ક - ગ્રાનામ સિટી ફેસ્ટિવલ્સ - 2 ગાય ગાડુન
આઇ ટી આઇ કે પોંચ ખણ્ડવા (મધ્યપ્રદેશ)
માં.ન.: -9977562587

स्मरण...



महाकवि रामधारी सिंह दिनकर



सूर्यकांत त्रिपाठी निगला

कलम आज उनकी जय बोल

कलम, आज उनकी जय बोल
 जला अस्थियाँ बारी—बारी
 चिटकाई जिनमें विंगारी,
 जो चढ़ गये पुण्यवेदी पर
 लिए बिना गर्दन का मोल
 कलम, आज उनकी जय बोल ।
 जो अगणित लघु दीप हमारे
 तूफानों में एक किनारे,
 जल—जलाकर बुझ गए किसी दिन
 मँगा नहीं स्नेह मुह खोल
 कलम, आज उनकी जय बोल ।

पीकर जिनकी लाल शिखाएँ
 उगल रही सौ लपट दिशाएं,
 जिनके सिंहनाद से सहमी
 धरती रही अभी तक डोल
 कलम, आज उनकी जय बोल ।
 अंधा चकाचौंध का मारा
 क्या जाने इतिहास बेचारा,
 साखी हैं उनकी महिमा के
 सूर्य चन्द्र भूगोल खगोल
 कलम, आज उनकी जय बोल ।

मातृ-वंदना

नर—जीवन के स्वार्थ सकल
 बलि हो तेरे चरणों पर माँ
 मेरे श्रम—संचित सब फल ।
 जीवन के रथ पर चढ़कर
 सदा मृत्यु—पथ पर बढ़ कर,
 महाकाल के खरतर शर सह
 सकूँ मुझे तू कर दृढ़तरय
 जगे मेरे उर में तेरी
 मूर्ति अश्रु—जल धीत विमल,
 दग—जल से पाबल, बलि कर दूँ

जननि, जन्म—श्रम—संचित फल ।
 बाधाएँ आयें तन पर,
 देखुं तुझे नयन—मन भर,
 मुझे देख तू सजल दुर्गा से
 अपलक, उर के शतदल पररू
 क्लेद—युक्त, अपना तन दूँगा,
 मुक्त करूगा तुझे अटल,
 तेरे चरणों पर देकर बलि
 सकल श्रेय—श्रम—संचित फल ।

पारिवारिक जुड़ाव

लघुकथा



हरिवल्लभ शास्त्री

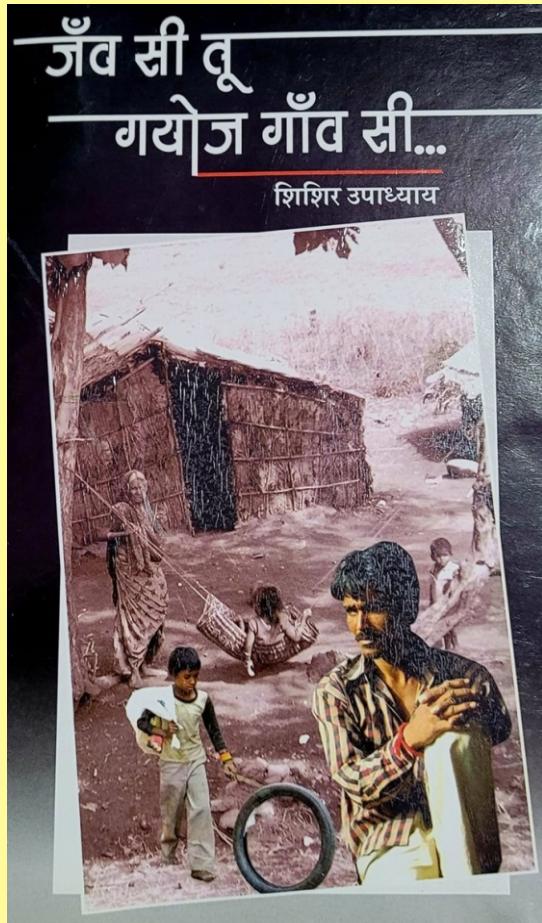
रंजना की माँ देखो सुबह —सुबह किसका मोबाइल आया है। मैं नहा रहा हूँ। हाँ देखती हूँ। अरे यह तो रानी बेटी का विडियो काल है, अमेरिका से हाँ बेटी क्या हाल चाल है? बढ़िया है माँ—चरण स्पर्श बेटा पापा आ रहे हैं अभी। अरे माँ आपसे ही बात करना है—आप मुझे विवाह में कौन—कौन सी रस्में होती है? वो सब पुरे वर्णन के साथ बताइए। क्यों बेटा अभी तो शादी को दो माह से अधिक है, और वो सब तो हमें देखना है, बस तुम तो जल्दी आ जाना। हाँ माँ मैंने एक माह पहले से छुट्टी ले ली है, पर आप रस्मों के बारे में अभी बता दो। क्योंकि पहले पढ़ाई के कारण व अब सर्विस के कारण अधिक विवाहों शामिल नहीं हो पाई तो अधिक पता नहीं है। पर बेटी फिल्में भी नहीं देखी क्या? अरे! माँ 'अपने परिवार—समाज की रस्में—संस्कार जानना है मुझे कोई बनावटी शादी नहीं करना। ठीक है मैं लिख कर भेज दूँगी, पर, अचानक इतनी जिज्ञासा क्यों? माँ हम अपने परिवार एवं रिस्तेदारों के सभी बच्चे मिल कर तय कर रहे हैं कि विवाह रस्मों में क्या—क्या करना है? और ड्रेसेस क्या रहेगी? अरे...ये सब कब और कहाँ तय कर रहे हो? तुम तो अमेरिका...मैं.. अरे अरे माँ टेशन मत लो, जैसे मैं आप से बात कर रही हूँ वैसे ही हम ग्रुप विडियो काल में सब तय करते हैं।'

वाह बच्चों, नयें जमाने का नया पारिवारिक जुड़ाव, बहुत खूब—शाबाश थैंक्यू पापा चरण स्पर्श !

महेश्वर

निमाड़ी लोकबोली के पुरोधा का साहित्य सृजन सम्मान योग्य हैं

मनोष कुमार पाटीदार 'मन्त्या'



साहित्य सृजन की सुंदर व मनमोहक वाटिका में लोकबोली निमाड़ी सदैव पुष्पित होती आई है। इसी वाटिका में शिशिर उपाध्याय जी का पहला निमाड़ी काव्य संग्रह 'जवं सी तू गयोज गांव सी' हाथों में है।

पद्मश्री सम्मानित स्व. पंडित रामनारायण उपाध्याय के पौत्र श्री शिशिर जी उपाध्याय ने अपने दादा का अनुसरण करते हुए एवं उनके साथ ही अध्ययनकाल के दौरान साहित्य की यात्रा करने वाले अलमस्त होकर अपनी अलग छवि बनाई है।

बात की जाए लोकबोली निमाड़ी को लेकर उनकी लेखनी की तो उनके लेखन प्रवाह में मां रेवा की झर-झर बहती पावस लहरें देखने को मिलती हैं। मूलतः श्री शिशिर उपाध्याय बड़वाह से हैं एवं इनका पैतृक गांव काळमुखी है। ग्राम्य जीवन सदैव लोक-संस्कृति एवं रीति-रिवाजों का पर्याय रहे हैं एवं इन्हें साहित्य में स्थान देना निमाड़ व निमाड़ी की लोक परम्परा रही है। इस परम्परा का निर्वाह जिस तरह पद्मश्री पं. रामनारायण जी उपाध्याय ने किया ठीक वैसे ही श्री शिशिर जी उपाध्याय ने भी किया है।

लोक सृजन के आंगन में श्री शिशिर उपाध्याय अर्जुन की तरह उतरे हैं जिनकी दृष्टि सिर्फ लक्ष्य पर रही। 'जवं सी तू गयोज गांव सी' उनकी लोकबोली निमाड़ी में पहली कृति है।

मां सरस्वती वंदना से रचना आरंभ होती है, जिसमें रचनाकार ने लोकबोली निमाड़ी के पुष्पकों में दिवंगत रामा दादा, (पं. रामनारायण उपाध्याय) बाबू दादा, (बाबूलाल सेन), गौरी प्रभाकर जी, विद्याधर जी, माध्या जी का स्मरण किया तो साथ ही समकालीन साहित्यकारों में जगदीश जी जोशीला, पार्वती जी व्यास, सदाशिव जी कौतुक, दिनेश जी, नरेन्द्र जी

जोशी, हरीश जी दुबे, अनुज जी को भी सम्मान याद किया –

गौरी, प्रभाकर, शिव, माध्या न निमाड़ी का गीत गाया

विद्याधर, निर्मल न मलय न हंसई—हंसई न पेट दुखाड़ा।

रचनाकार की रचनाओं में निमाड़ को लेकर प्रेम भी बखूबी झलक रहा है –

जसो—जसो ई घाम पड़ग

वसो—वसो हरियावांगा हम

हम तो नीम, निमाड़ का छे

छावलई न ख वावांगा हम।

लोकबोली को हम मां का सम्मान देते आए हैं। रचनाकार ने निमाड़ी न बोलने व भूलने वाली युवा पीढ़ी को उलाहना दी है—

सबकी माता न पूजी तुमन

म्हारी माड़ी ख भुली गया

कालेज की पढ़ाई का भित्तर

निमाड़ी ख भुली गया....

साहित्य सृजन में कुछ अलग हटकर करना एवं मौलिकता बनी रहे इस ओर भी रचनाकार ने उस्करण जैसी विधा का आविष्कार किया। उस्करण अर्थात् भोजन करते समय चार, चटनी, मुरब्बा के स्वाद से और भी स्वादिष्टता भोजन में बनी रहे, ठीक वैसा ही लंबी कविताएं पढ़ने के बाद मन ऊबने लगे तब तीन से चार पंक्तियों का उस्करण भी पाठकों को बनाए रखता है। उस्करण नवीन विधा को रचना के माध्यम से इस तरह समझ सकते हैं—

म्हारी माय
घणी चतुर थी
महीना मड दुई कावड
करती थी
चतुरथी...
जेका सी मनड
करवा चौथ की
उम्मीद राखी
ओनज मखड
बांधी राखी

प्रत्येक पंक्ति में हम देखते हैं कि भावार्थ एवं व्यंग्य का पुट है। यही उस्करण विधा है। लोकबोली की महत्ता सदैव बनी रहे रचनाकार श्री शिशिर उपाध्याय ने निमाड़ी को छह और गुंजित कर दिया है—

रना देवी नड धणियर राजा, जसी या सिंगरेल छे
'विन्ध्य—सतपुड़ा' का आंचल मड, निमाड़ी बिखरेल छे।

यहां 'आंचल' हिन्दी शब्द हो गया। रचनाकार चाहते तो 'आंचल' की जगह निख्खल निमाड़ी 'खोला' शब्द का बखूबी प्रयोग कर सकते थे।

निमाड़ी लेखन में यह देखने में आया कि जबरन हिन्दी शब्दों का प्रयोग कर निमाड़ी में रचनाएं लिखी गईं जिससे मौलिकता खत्म हो जाती है। यह हाल सोशल मीडिया पर अधिकतर देखने को मिला। जहां तक कोशिश रहे कि निमाड़ी लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग करें जिससे मौलिकता भी बनी रहे व साहित्य सृजन में ऊंचाईयां भी मिले।

रामायण का वह प्रसंग सभी को याद है जिसमें प्रभु श्रीराम को चौदह वर्ष का वनवास मिल जाता है और इधर अयोध्या नगरी में सन्नाटा पसर जाता है। राजा दशरथ पुत्र बिछोह में दुखी हो जाते हैं। माता कौशल्या, सुमित्रा की अंखियां लाल के प्रेम में व्याकुल—सी हो जाती है ठीक वैसी ही पृष्ठभूमि रचनाकार की रचना 'जंव सी तू गयोज गांव सी...' में देखने को कुछ इस तरह मिली—

जंव सी तू, गयोज गांव सी
माय रड़ी रझेज, थारा नाव सी
बाऊजी तड़खड याद करज रे
'डोला गाल्ज 'दशरथ—भाव सी।

रचनाकार का चिंतन जितना गहन होगा रचनाएं भी उतनी ही प्रभावी होगी। श्री उपाध्याय जी की रचनाओं में चिंतन के साथ लय, शैली दोनों हैं—

सुख की तिल्ली छे, दुख को ताड़ छे बेटा,
कसो कटड गो बुढ़ापौ, यो रस्तो पहाड़ छे बेटा ॥

यहां पहाड़ देशज हिन्दी शब्द है। निमाड़ी लोकबोली में पहाड़ को 'बयड़ो' छोटी पहाड़ी को 'बयड़ी' कहा जाता है। यहां 'पहाड़' का होना जरूरी भी था। क्योंकि रचनाकार ने काफिए में ताड़, पहाड़, दाढ़, लाड़, उजाड़, झाड़, निमाड़, तिहाड़ का सुंदर व सटीक प्रयोग किया है।

ऐसा भी नहीं है कि हिंदी का एक शब्द भी न हो लेकिन जहां जरूरी हो वहां आवश्यक रूप से लेना ही पड़ेगा। जिस तरह रचनाकार श्री शिशिर जी उपाध्याय ने 'पहाड़' का प्रयोग कर मौलिक सृजन किया है।

पुनः स्मरण दिलाना चाहूगा कि रचनाकार ने निमाड़ी में लिखने वालों को, लोकबोली के संरक्षण में बहुत अच्छी बात कही है –

बोली खड़ बचावरुं होय तो,
अपनी बोली मड़ बोलनुं सीख।

'अपनी' हिन्दी हो गया। 'अपणी' का प्रयोग यहां पर बहुत जरूरी था। रचनाएं अच्छी हैं परन्तु हिन्दी शब्दों को उपयोग में लेने से बहुत जगह प्रभाव पड़ा है।

श्री उपाध्याय जी मां नर्मदा के पावन किनारे बसे हैं। पंचकोशी यात्रियों को निहारते आएं हैं। उनमें मां नर्मदा के प्रति अगाध प्रेम व समर्पण की भावना भी है। एक गीत उन्होंने मां नर्मदा को सादर समर्पित किया है –

रात पाणी मड़ तारा उतरी आया,
नरबदा जी मड़ दीपक सिराया
हमनड़ कारतिक पुण्यव का गीत गाया
नरबदा जी मड़ दीपक सिराया।

फाग के दिनों में होली उत्सव हो और पूरण–पोल्ई का जिक्र न हो ऐसा तो हो ही नहीं सकता एवं साथ ही बचपन की स्मृति को रचनाकार ने यहां उद्धृत किया है –

होल्ई पड़ एक वात, जी हर साल याद आवज,
पूरण–पोल्ई, भजा की सजेली थाळ याद आवज ॥
डांडा गडणड का दिन सीजड़, लक्कड़–कंडा चुरावता था
बचपन का दोस–गबरु नड़ गोपाल याद आवज।

जब बात आती है लोक संस्कृति एवं पर्व की तो निमाड़ में गणगौर पर्व धूमधाम व उत्साह भाव भक्ति के साथ मनाया जाता है। रचनाकार ने गणगौर का न्योता भी बखूबी दिया है –

इना साल 'जुवारा' हम बी वावांगा ओ काकीजी
'रना देवी' खड़ घर, लावांगा ओ काकीजी।

बरसात के दिन और नदी नालों से उफनता पानी बिजली की कड़कड़ाहट एवं बादलों का गरजना यह सब रचनाकार की कल्पना का समावेश है यहां पर –

नद्दी–नाला, खाल्या– खोदरया उफाण पड़ आया।
काला–काला वादला फिरी मचाण पड़ आया।

कुर्सी मिलने पर नेताओं की खटिया खड़ी करने में भी पीछे नहीं हैं श्री शिशिर उपाध्याय जी –

मिली गईज कुर्सी, तो चन्द्राय मत

मांडवा पड़ चईड़ी नड़, तू गिलक्याय मत ।
लोग न खड़ पीणड को पाणी नी हई
स्थिमिंग पुल मड तू डोफलाय मत ।

हिन्दी सिनेमा के सुपर स्टार राजेश खन्ना साहब मेरे प्रिय अभिनेता रहे हैं। सन् 2014 से 2020 के बीच उनकी करीब 80 फिल्में देखी मैंने। आनंद, आराधना, प्रेम कहानी, अनुरोध, आपकी कसम, हाथी मेरे साथी, रोटी, अमर प्रेम, सफर, सच्चा झूठा, अपना देश, कटी पतंग, जैसी सुपरहिट फिल्में देख मैंने साहित्य लेखन की तब शुरुआत ही की थी। यहां यह प्रसंग इसलिए छेड़ना पड़ा क्योंकि रचनाकार श्री उपाध्याय जी ने राजेश खन्ना साहब की स्मृति में एक रचना सादर श्रद्धांजलि रूप में अर्पित की है –

सच्चा झूठा, अपना देश, कटी पतंग, जैसी सुपरहिट फिल्में देख मैंने साहित्य लेखन की तब शुरुआत ही की थी। यहां यह प्रसंग इसलिए छेड़ना पड़ा क्योंकि रचनाकार श्री उपाध्याय जी ने राजेश खन्ना साहब की स्मृति में एक रचना सादर श्रद्धांजलि रूप में अर्पित की है –

राजेश खन्नो चली गयो
सिनिमा को पन्नो चली गयो
हम सबइ न को काको थो
अदाकार वू बांको थो
वू रौमांश को रोमियो थो
वू आनंद ममता करुणा को थो
असो सांठो— गन्नों चली गयो
राजेश खन्नो.....

विभिन्न रचनाओं को पढ़कर मन हर्षित हुआ एवं मुझ अनुज को यह शिक्षा मिली कि हालात कैसे भी रहे, कलम हमेशा चलती रहना चाहिए। श्री शिशिर जी उपाध्याय का हृदय बड़ा है एवं निमाड़ी की सेवा अपनी मां की तरह करते आए हैं। पदमश्री सम्मानित पं. रामनारायण उपाध्याय को वह एवं सभी 'रामा दादा' के नाम से जानते आए हैं। श्री शिशिर जी उपाध्याय में रामा दादा की झलक—सी दिखाई देती है। निमाड़ी के साथ ही हिन्दी में उनका लेखन सोशलमीडिया पर सिद्धत के साथ देखने में आता है। विभिन्न सम्मानों से सम्मानित व मंचीय कवि श्री शिशिर जी उपाध्याय निमाड़ लोक संस्कृति न्यास, खंडवा के अध्यक्ष एवं निमाड़ साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, बड़वाह के संयोजक हैं।

'जंव सी तू गयोज गांव सी' उनकी लोकबोली निमाड़ी में पहली कृति है। उनका लेखन प्रभावी है। परंतु अधिकांशतः हिन्दी शब्दों का प्रयोग एवं संपादन की कमी की वजह से थोड़ी कसर रह गई है। दोहराव करना उचित नहीं परंतु फिर भी स्पष्ट कहना चाहूँगा कि जो भी निमाड़ी में सृजन कर रहे हैं वह पुस्तक प्रकाशित होने से पहले प्रुफ रीडिंग वरिष्ठ निमाड़ी साहित्यकार व जानकार से अवश्य करवाएं। एक अच्छी पुस्तक तभी सही मायने में पढ़ने योग्य मानी जाती है जिसमें शुद्धता एवं मौलिकता का प्रवाह हो। प्रस्तुत समीक्षा में मैंने चंद्र बिन्दु का प्रयोग मोबाइल में तकनीकी समस्या के चलते नहीं किया, कृपया इसे अनसुना करें। निश्चिंत श्री उपाध्याय जी की इस कृति में अच्छा लेखन है। रचनाओं में भाव पक्ष मजबूत है। उनका लेखन एवं साहित्य सृजन चमकते सूरज की तरह है। पुस्तक का आवरण सुवासरा निवासरत छायाकार बंशीलाल परमार जी ने साफ्ट कैमरे के फ्लैश से पुस्तक में प्रभासित कर सुंदरता के साथ व आकर्षक बनाया। आशा करता हूँ कि इस समीक्षा के बाद एक और निमाड़ी कृति प्रकाशित होकर आएं। निमाड़ के समस्त साहित्यकार उनके साथ हैं व गर्व के साथ मुझ अनुज को कहना पड़ रहा है कि जड़ों की ओर लौटने का काम साहित्य सृजन के माध्यम से उपाध्याय परिवार ने किया है। आप सभी निमाड़ी लोक संस्कृति के पुरोधा हैं।

इस सुंदर कृति के लिए सम्माननीय श्री शिशिर जी उपाध्याय को हार्दिक शुभकामनाएं।

पता : ग्राम ईटावदी तह. महेश्वर, खरगोन (म.प्र.)

मो. : 8435740937

पिछले दिनों रंगमंच...

नीरस जीवन में खुशियां तलाशने की मशक्कत करता है नाटक 'मामूली आदमी' का नायक



वाल्मीकि रंगशाला उ.प्र. संगीत नाटक अकादमी परिसर गोमती नगर में मंचित भावप्रधान नाटक 'एक मामूली आदमी' की।

प्रसिद्ध लेखक अशोक लाल का नाटक 'एक मामूली आदमी' अकिरा कुरोसावा की फिल्म 'इकिरु' (1952) से प्रेरित है। नाटक में दिखलाया गया है कि महापालिका के दफतर में बड़े बाबू ईश्वर चंद्र अवस्थी (महेन्द्र धुरिया) सीधे सादे, ईमानदार लेकिन सिद्धांतों पर चलने वाले इंसान हैं। पत्नी के न रहने पर उन्होंने अपने बेटे उमेश (दीपक राही) का जीवन संवारने में अपनी सारी उम्र लगा दी। जैसा कि आमतौर पर होता है शादी के बाद उमेश अपनी पत्नी रमा (दीपिका) व बेटे स्वप्नेश के साथ अपनी एक अलग ही दुनिया में व्यस्त हो गया। जबकि ईश्वर चंद्र का जीवन घर और दफतर के बीच ही सिमटता चला गया। रिटायरमेंट करीब आते देख अवस्थी जी को अकेलेपन का एहसास होता है, वह दफतर के मस्तमौला साथी खरे (विजयभान सिंह) का साथ पाने की कोशिश करते हैं मगर उन्हें वो खुशी नहीं मिलती जिसकी उन्हें तलाश थी। दफतर की एक कलर्क लक्ष्मी (संध्या सिंह), जो कि बेहद खुश मिजाज है, ईश्वर चंद्र लक्ष्मी से उसके खुश रहने का राज जानने की कोशिश करते हैं, और यहीं उन्हें हासिल होता है खुशहाल जीवन का सूत्र।



झधर मध्यम वर्गीय लोगों से आबाद जे जे कालोनी के पास स्थित महापालिका के मैदान, जिसे प्राइमरी स्कूल के लिए रिजर्व रखा गया है, में एक विद्यायक महोदय ट्रस्ट के जरिये मंदिर बनाने की फिराक में हैं। जबकि कालोनी वाले चाहते हैं कि इस मैदान में पार्क और सार्वजनिक शौचालय बनाया जाये। इस मैदान पर पार्क बनाने की सहमति की फाइल अवस्थी जी के पास है। मंदिर के हिमायती महापालिका के कमिशनर (सुमित गुप्ता), कलर्क बग्गा व तिवारी (अंचित श्री, सम्राट यादव) और पंडित (हर्षित, अर्जीत) बहुत दवाब डालते हैं लेकिन अवस्थी जी डटे रहते हैं। आखिरकार पार्क की एक बैंच पर रात की खमोशी के बीच अवस्थी जी की देह और आत्मा का रिश्ता टूट जाता है। तेरहवीं के दिन जब चौकीदार अवस्थी जी का सामान लेकर पहुंचता है तब कहीं उमेश को पता चलता है कि उनके पिता को गैस्टिक कैंसर था। प्रमुख भूमिकाओं में विजयभान (खरे), दीपक राज राही (उमेश), दीपिका सिंह (उमेश की पत्नी रमा) ने अपने किरदारों को बखूबी निभाया। संवेदनशील दृश्यों में संध्या सिंह (लक्ष्मी) के चेहरे पर तेजी से बदलते भाव उनकी अभिनय क्षमता को दर्शाने में पूरी तरह सफल रहे।

हालांकि ईश्वर चंद्र के चरित्र में महेन्द्र धुरिया का अभिनय तो ठीक था मगर डिलीवरी पिच डाउन होने से उनके कई महत्वपूर्ण संवाद पीछे बैठे दर्शकों तक नहीं पहुंच सके। महेश जायसवाल, जौली घोष, कमल गौड़, जिज्ञासा शुक्ला, कुशल गुप्ता, अमित सोनकर ने भी नाटक में अभिनय किया। नाटक का निर्देशन वरिष्ठ रंगकर्मी एवं कंजूस मक्खीचूस, असुर 2 जैसी हिट फिल्म वेबसिरीज में महत्वपूर्ण किरदार निभा चुके अभिनेता डॉ. ओमेन्द्र कुमार ने किया है। सलाहकार निर्देशक, प्रकाश परिकल्पना कृष्णा सक्सेना, संगीत विजय भास्कर, मंच व्यवस्था आकाश शर्मा की रही। मालूम रहे इटा मुंबई, अस्मिता थिएटर दिल्ली सहित देश के कई थिएटर गुप्त इस नाटक के शोज कर चुके हैं। उत्तर प्रदेश में पहली अनुकृति कानपुर ने पहली बार इसका बहुत ही खूबसूरत मंचन किया। मंचन से पूर्व वरिष्ठ रंगकर्मी, अभिनेता एवं दर्पण लखनऊ के महासचिव डॉ. अनिल रस्तोगी, वरिष्ठ रंगकर्मी अश्विनी श्रीवास्तव तथा वरिष्ठ रंगकर्मी, नाटक के निर्देशक डॉ. ओमेन्द्र कुमार ने द्वीप प्रज्जविलत किया।

दिल को छू देने वाले संवादों से सजी नाटक 'टेररिस्ट की प्रेमिका' की प्रस्तुति

राजौरी / कानपुर, (रंग संस्कृति प्रतिनिधि)। जम्म-काशिमर के राजौरी में दिल को छू लेने वाले संवाद, सर्पेंस और थ्रिल से सजी अनुकृति रंगमंडल कानपुर की नाट्य प्रस्तुति टेररिस्ट की प्रेमिका के मंचन के साथ गवर्नर्मेंट ब्यॉयज पहाड़ी हॉस्टल राजौरी में रंगमंच थिएटर गुप के डॉ. शैलेन्द्र शर्मा मेमोरियल राष्ट्रीय नाट्य समारोह का शुभारंभ हुआ। औरत जब किसी से प्यार करती है तो बहुत ज्यादा करती है, उसकी कोई हद नहीं होती। अपने प्यार को सावित करने के लिए वो जान दे भी सकती है और किसी की जान ले भी सकती है। पाली भूपिंदर सिंह के लिखे इस नाटक का निर्देशन डॉ. ओमेन्द्र कुमार ने किया।



नाटक की नायिका प्रकृति से प्रेम करने वाली, बेहद संवेदनशील अनु (संध्या सिंह) का विवाह डीएसपी रैंक के पुलिस अफसर देवराज सिंह (विजयभान सिंह) से होता है। देव उसे नया नाम देता है अनीत। देव की पोस्टिंग पहाड़ी इलाके में होती है तो अनीत को लगता है कि आसमान छूते पहाड़, देवदार के वृक्षों के बीच रुई जैसे सफेद बादलों के बीच खूबसूरत जीवन का उसका सपना शायद सच हो गया, लेकिन यहां गोलियों की आवाज और धमाके सुन कर उसे निराशा होती है। उसे पता चलता कि यह इलाका आतंक प्रभावित क्षेत्र है। तभी कहानी में प्रवेश होता है एक अजनबी (दीपक राज राही) का। उसके हाव-भाव से अनीत उसे देव का कोई पुराना दोस्त समझ बैठती है लेकिन उसका भ्रम जल्दी ही टूट जाता है। अजनबी बताता है कि मैं एक टेररिस्ट हूँ और देव से एक पुराना बदला लेने के लिए उसे खत्म करने आया हूँ। अजनबी बताता है कि पहली बार जब मैं मिशन पर गया तो घबड़ाहट में एक खड़डे में जा गिरा, मेरा पूरा शरीर छिल गया था, पुलिस जब मुझे तलाश रही थी। मेरी प्रेमिका नीलू को पता चला तो वह आधी रात में तीन मील जंगल छानकर मेरे लिए हल्दी मिला दूध लेकर आयी।

अजनबी यह भी बताता है कि देव ने किस तरह उसका पता जानने के लिए उसकी प्रेमिका नीलू को पांच दिन हिरासत में रखा, बुरी तरह उसे टार्चर किया। और अंत में तकलीफ की इंतहा होने पर पुलिस हिरासत में ही नीलू ने अपनी जान दे दी। टेररिस्ट बताता है कि देव ने कैसे प्रमोशन और दस लाख रुपये का इनाम हासिल करने के लिए एक फर्जी एनकाउंटर में उसकी जगह पांच बहनों के भाई और एक विधवा मां के इकलौते बेटे को मार डाला। अनीत अजनबी से देव की जान बख्शने की मिन्नतें करती है, फिरोजी चुनरी ओढ़ उसे नीलू का वास्ता भी

देती है। अजनबी को अनीत के दर्द में अपनी प्रेमिका नीलू नजर आ रही है। लंबी जद्दोजहद के बाद आखिरकार अजनबी देव को मारे बिना अनीत को बेहोश कर वहाँ से चला जाता है। हवलदार खैराती लाल (हर्षित शुक्ला) भी जब घर आता है तो टेररिस्ट की बातों की पुष्टि करता है। इधर शाम को घर लौटने पर जब देव को पता चलता है कि वह टेररिस्ट पूरे दो घंटे उसके घर में उसका इंतजार करता रहा लेकिन उसे मारे बिना चला गया, आखिरी क्यों? देव अनीत पर शक जताता है, उसे पीटता भी है। अनीत भी अब तक काफी आक्रोशित हो चुकी है आखिर क्या करेंगी वह, देव को माफ करेंगी या टेररिस्ट के अधूरा मिशन को पूरा? नाटक के चारों कलाकारों का अभिनय स्वाभाविक और अच्छा रहा, लेकिन अनीत के किरदार को बखूबी जीवंत कर संघ्या सिंह अपनी अलग छाप छोड़ने में कामयाब रहीं।

अलग—अलग दृश्यों में तीन गीतों का बड़ी खूबसूरती से इस्तेमाल दर्शकों को नाटक के मूड से जोड़ने में सफल रहा। संगीत विजय भास्कर एवं प्रकाश संचालन नरेन्द्र सिंह का था। समारोह में सेतु सांस्कृतिक केन्द्र वाराणसी के कलाकारों ने नाटक मोह का मंचन भी किया। मनू भंडारी की कहानी का नाट्य रूपांतरण प्रतिमा सिन्हा व निर्देशन सलीम राजा ने किया। कार्यक्रम शुरू होने से पहले फेरिटवल डायरेक्टर विशाल पहाड़ी ने मुख्य अतिथि डॉ.डी.सी. चेयर पर्सन नसीम लियाकत व ए.एस.पी विवेक शेखर को मंच पर आमंत्रित किया।

लघुकथा में रंगमंच की विपुल संभावनाएं - मुकुल त्रिपाठी

भोपाल। (रंग संस्कृति प्रतिनिधि) वर्तमान समय लघुकथा का है, लघुकथा अब चुटकुलेबाजी से मुक्त हो चुकी है, इसमें लेखक आज गम्भीर सृजन कर रहे हैं, लघुकथा में लेखन, वाचन के साथ ही इनके मंचन की भी विपुल संभावनाएं हैं, हमें अच्छी लघुकथाओं का सीमित संसाधनों और एकदम नए लोगों के साथ मंचन करना चाहिए इससे विधा और समृद्ध होगी। यह उदगार हैं वरिष्ठ रंगकर्मी अभिनेता और लेखक मुकुल त्रिपाठी के जो लघुकथा शोध केंद्र समिति भोपाल



द्वारा कोलार मार्ग स्थित पुस्तकालय के सभागार में आयोजित लघुकथा गोष्ठी एवम विमर्श के आयोजन में बोल रहे थे। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. सैय्यद जावेद नोमानी ने उर्दू लघुकथाओं में 'अफसौंचे' के बारे में अपनी बात रखते हुए उर्दू रचनाकारों के अफसौंचों का हिंदी अनुवाद और हिंदी लघुकथाओं का उर्दू अनुवाद पाठकों तक पहुँचाने की बात पर जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन घनश्याम मैथिल 'अमृत' ने किया इस अवसर लघुकथा गोष्ठी में कांता रॉय ने 'स्वाभिमान', सुनीता प्रकाश ने 'हरसिंगार', 'डॉ. मौसमी परिहार ने 'आत्मविश्वास', मेघा मैथिल ने 'माप-दण्ड' और घनश्याम मैथिल ने 'अपने-अपने झंडे' समसामयिक, विविध जलन्त विषयों पर कॅंट्रिट और विसंगतियों पर प्रहार करने वाली लघुकथाओं का पाठ किया। इस कार्यक्रम में मधुलिका सक्सेना, शोफालिका श्रीवास्तव, प्रियंका श्रीवास्तव सहित अन्य लघुकथाकार उपस्थित थे, कार्यक्रम के अंत में केंद्र की निदेशक कांता रॉय ने सभी का आभार प्रकट किया।

रविंद्रनाथ टैगोर की जयंती पर विशेष

उस मंच से शर्मिला जी ने गुरुदेव से, अपने रिश्ते को शिद्दत से याद किया..

मेरे लिए भी, वो एक अनमोल क्षण... एक अनूठा अवसर था जब कविवर रविंद्रनाथ टैगोर के परिवार की तीसरी पीढ़ी की एक सदस्य, मेरे आयोजन में अपने पितृपुरुष को शिद्दत से स्मरण कर रहीं थीं... उन्होंने मंच से न केवल टैगोर साहब से अपनी माँ की तरफ से रिश्ते की बात और उनसे जुड़े किस्से सुनाये बल्कि उनके गीत..."जदी तोरे डाक शुने केउ न आसे तबे एकला चलो रे"...को सस्वर तन्मयता से सुनाया भी..

ये हैं अप्रतिम सौंदर्य की धनी, बांग्ला – हिंदी रजतपट की सुपरिचित नायिका शर्मिला टैगोर... अवसर था, पर्यावरण पर आधारित मेरे द्वारा बनाई गई एक लघु बाल फिल्म 'धरोहर' का 1991 में, भोपाल के रविंद्र भवन में शुभारम्भ... आयोजन की दूसरी खास मेहमान थीं जानी मानी अभिनेत्री शबाना आजमी, जो, अपनी व्यस्तता के बावजूद कुछ पल के लिए मेरे कार्यक्रम में पधारीं। 1991 के लोकसभा चुनाव में मशहूर क्रिकेटर नवाब मसूर अली खां पटौदी, भोपाल से उम्मीदवार थे... उनकी शरीक ए हयात शर्मिला जी उनके प्रचार में दिन रात संसदीय क्षेत्र में सभाएं ले रहीं थीं... उधर राष्ट्रीय जनता दल की ओर से स्वा.मी

अग्निवेश जी भी प्रत्याशी थे... शायर जावेद अख्दार साहब की बेगम शबाना आजमी... स्वामी जी के लिए प्रचार में जुटी हुई थीं..।

शील निकेतन स्कूल की संचालक ओर अभिनेत्री शीला टंडन जी की मदद से मेरी टीम ने उनके स्कूल के बच्चों को प्रशिक्षण देकर हिल स्टेशन पचमढ़ी में, पर्यावरण पर केंद्रित लघु फिल्म फिल्माने का प्लान बनाया... फिल्म चाहे छोटी थी, पर उसका लॉन्चिंग भव्य रूप से करने का जूनून था... शहर में दो – दो बड़ी अभिनेत्रियों के होने पर... दोनों को एक मंच पर एक साथ लाने का विचार बना.... जबकि चुनाव मैदान में दोनों अलग अलग पार्टियों के लिए कैम्पेनिंग कर रहीं थीं... अखबार में संपादन से जुड़े होने से दोनों से मुलाकात आसानी से हो गईं।

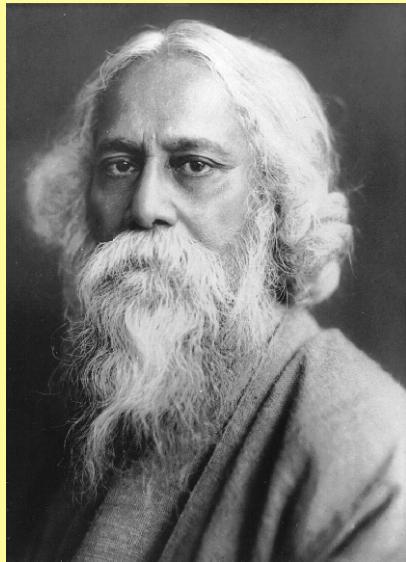
शबाना जी ने, चुनाव के दौरान एक ही मंच शर्मिला जी के साथ शोयर करने को लेकर थोड़ा टाल मटोल किया... आखिरकार दस मिनट के लिए आने को राजी हो गईं।

शर्मिला जी को आमंत्रित करने, मैं अपने मित्र आशीष भाई और रवि चौधरी के साथ... ईदगाह हिल्स पर उनकी अहमदाबाद पैलेस स्थित फ्लैग



हाउस कोठी पर पहुंचा।

भोपाल नवाब द्वारा अडॉप्टेड पटौदी, हरियाणा रियासत के प्रिंस 'टाइगर' उर्फ मसूर अली खां... की



मिलिक्यत में आज भी भोपाल की कई बड़ी हवेलियां और फंदा से सीहोर तक इफरात जमीन जायदाद शुमार हैं... जो उनके इंतेकाल के बाद शर्मिला जी... उनके अभिनेता बेटे सैफ अली खां...बेटी एकट्रेस सोहा अली और सबा अली के नाम जाहिर तौर पर सुपुर्द हो चुकी है.. सैफ को नवाब भोपाल का वारिस माना जाकर, साफा पहनाने की रस्म अदायगी भी बाकायदा खानदान के लोगों के बीच की जा चुकी है।

शर्मिला जी अपनी महलनुमा कोठी के लॉन में जरा से इंतजार के बाद अवतरित हुई। शानदार गुलाबी बांगला स्टाइल साड़ी में, तब 55 से ऊपर भी उनका व्यक्तित्व.. अत्मुद सौंदर्य के साथ शाही चमक लिए हुए था... मुस्कुराहट के साथ गालों में पड़ने वाले डिम्पल्स ने 'काश्मीर की कली' से लेकर 'आराधना' तक का स्मरण उस एक पल में करा दिया..

अपनी चुनाव सभा की मशरूफियत का जिक्र करते हुए... उन्होंने बड़े ही स्नेह से मुझे शार्ट फिल्म की बधाई दी और सिर्फ आधा घंटे में प्रोग्राम से बिदा देने का वादा हमसे लिया.. उनके सेक्रेटरी शरीफ मियां ने बाकायदा लिखित मंजूरी पर मैडम के दस्तखत लेकर, उनका पत्र हमें सौंपा...

रविंद्र भवन में उस आयोजन में मेरे पिताजी स्व. श्री एच पी सक्सेना भी खास तौर पर आशीर्वाद देने पहुंचे, खास इसलिए भी कि वो शर्मिला जी के जबरदस्त फैन भी रहे.. थे..

शील निकेतन के बच्चों से आधे... और शेष आमंत्रित अतिथियों से भरे रविंद्र भवन में निर्धारित समय से पांच मिनट पहले ही पधार गई शर्मिला जी का मेरे पिताजी ने बुके से स्वागत किया... मंच पर आकर जब उन्होंने बच्चों को भारी तादाद में देखा तो उनके चेहरे पर मुस्कुराहट बढ़ गई..

शबाना जी के पी ए से मालूम हुआ कि उनका आना मुश्किल है... लिहाजा हमने... शर्मिला जी के समय का खयाल रखते हुए शीला टंडन जी... फिल्म, टीवी और रंगमंच के सुप्रसिद्ध अभिनेता राजीव वर्मा जी और कुछ सेलेक्टेड बच्चों पर एक सांकेतिक दृश्य फिल्माते हुए... शर्मिला जी के हाथों क्लैप बोर्ड दबाने की औपचारिकता पूरी करवाई.. आकाशवाणी के जाने माने गायक स्व. रामकिशन चन्द्रेश्वी द्वारा उनकी बेटी अनीता और कोरस के साथ तैयार गीत 'तितली रानी... बड़ी सयानी...' की संगीतमय प्रस्तुति दी गई...

तभी अचानक अप्रत्याशित रूप से शबाना आजमी जी अपने दल के कुछ नेताओं के साथ हाल में पीछे की सीट पर आकर चुपचाप बैठ गई... शर्मिला जी और हम लोगों को पता लगा तो गीत समाप्त होते ही मैं उन्हें स्वागत करने और मंच पर बुलाने गया... उन्होंने वहाँ बैठने का कहा...

शर्मिला जी ने अपने उद्बोधन में शबाना जी का जिक्र किया... और आग्रह किया कि पॉलिटिक्स को साइड में रखकर फिल्म इंडस्ट्री की हमारी दोस्ती के खातिर प्लीज स्टेज पर आइये...

तब .. शबाना जी को आना ही पड़ा.. सिर्फ पांच मिनट रुककर हमें बधाई देकर वो रवाना भी हो गई...

शर्मिला जी ने माइक पर शबाना जी की तारीफ करते हुए कहा कि हम दोनों आपके भोपाल की बहू हैं.. बड़ी बहू के नाते मैं इन्हें जाने की इजाजत दे रही हूं..

सिर्फ आधा घंटे का टाइम देकर भी शर्मिला जी पूरे डेढ़ घंटे हम सबके साथ रहीं... रविंद्रनाथ जी का स्मरण करते हुए उनका बांगला गीत... "एकला चलो रे..." संगीत के साथ सुनाकर ऑडिएंस को अभिभूत कर दिया...

कार्यक्रम समाप्ति के बाद मेरे पिताजी से, देर तक रविंद्रनाथ जी से सम्बंधित बातें वहाँ हॉल में बैठकर करती रहीं... पत्रकारों के सवालों के जवाब भी दिए...

नवाब की बीवी के नाते भोपाल की बेगम और इतनी बड़ी एकट्रेस का ये सहज सरल व्यवहार सभी को लुभाने वाला साबित हुआ... और मेरे लिए यादगार।

साभार - राजीव सक्सेना की फेसबुक वॉल से

राहुल नेमा के ज़ज्बे और मातापिता के समर्पण को सलाम



गजब की इच्छाशक्ति और जिजीविषा के बल पर कौन बनेगा करोड़पति में एक करोड़ के सवाल तक पहुँचने वाले राहुल नेमा खुद तो मशहूर हो गए हैं उन्होंने मध्यप्रदेश की राजधानी को भी सुर्खियों में ला दिया है। इकतीस बरस के राहुल ऑस्ट्रियोपेरोसिस की गंभीर व्याधि से पीड़ित होने पर भी भोपाल में ग्रामीण बैंक में असिरेंट मैनेजर हैं। जाहिर है इस ओहदे तक पहुँचने में राहुल के ज़ज्बे और हार ना मानने की इच्छाशक्ति के साथ उनके माता पिता सीमा और विजय नेमा के समर्पण की अनुकरणीय भूमिका रही है। राहुल के लालन पोषण और उसको इस मुकाम तक पहुँचाने के लिए दोनों ने कितनी तपस्या और परिश्रम किया होगा इसकी हम सिर्फ कल्पना ही कर सकते हैं। एक करोड़ के सवाल के जवाब पर श्योर ना होने से उन्होंने बिदा ले ली। राहुल उस ऑस्ट्रियोपेरोसिस से पीड़ित हैं जो बीस हजार में से किसी एक को होता है। इसमें हड्डियां टूटी रहती हैं और ट्रैवल करते, नींद में करवट लेने या किसी के द्वारा गलत तरीके से पकड़ लिए जाने पर फ्रैक्चर हो जाता है और उन्हें 360 फ्रैक्चर हो चुके हैं। उनकी उंचाई तीन फीट से भी कम है। तमाम मुश्किलों के बावजूद वे जिंदादिल तरीके से रहते हैं। पिता भी सरकारी नौकरी में हैं। शो में मौजूद माँ सीमा ने बताया की उसे पहले घर में पढ़ाना शुरू किया और स्कूल में चौथी क्लास में दाखिल किया। राहुल ने आठवीं में जिले में टॉप किया और उसे राष्ट्रीय बाल पुरस्कार भी मिल चुका है। राहुल ने बताया की जीती राशि से वो ऐसी किसी डिवाइस तक पहुँचने की कोशिश करेंगे जो खुद के पैरों पर खड़ा होने के उनके स्वप्न को साकार कर सके। दुर्लभ बीमारी से होने वाली शारीरिक अक्षमता को अंगूठा दिखा कर बैंक मैनेजर जैसे संवेदनशील ओहदे पर पहुँचने वाले राहुल नेमा ने केबीसी में भाग लेकर और 50 लाख जीत भारत के अपने जैसे हजारों बीमारों में नयी ऊर्जा और प्रेरणा का संचार किया है। अफसोस केबीसी में उनके प्रदर्शन को मध्यप्रदेश के मीडिया ने एक साधारण घटना की तरह पेश किया। जरुरत है इंटरव्यू आदि के मार्फत उनकी उपलब्धि को जन जन तक पहुँचाया जाए जो उन जैसों में जीवन के प्रति नयी उम्मीद जगाएगी।

(सोशल मीडिया से साभार)



घर बैठे रंग संस्कृति के सदस्य बनें

सदस्यता फॉर्म

◆ वार्षिक शुल्क 100/- ◆ 3 वर्षीय शुल्क 270/- ◆ 15 वर्षीय शुल्क 1100/-

(डाक खर्च अतिवित)

नाम.....

निवास पता

दूरभाष..... ईमेल.....

सदस्यता का प्रकार

★ वार्षिक/ 3 वर्षीय/ 15 वर्षीय शुल्क रूपये.....

★ सदस्यता यूनियन बैंक शुल्क मनीआर्ड द्वारा या रंग संस्कृति के खाता क्रमांक 549101010050241 IFSC CODE UBINO554910

★ ड्राफ्ट/ चेक क्रमांक/ यूपीआई ट्रांजेशन नं.....

★ यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया शाखा मंदाकिनी, कोलार रोड, भोपाल - 462042 (म.प्र.)

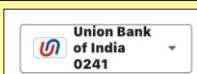
आपके पास यदि संस्कृति, रंगमंच, स्थानीय प्रतिभा खोज से संबंधित लेख, फोटो, समाचार एवं स्व-लिखित रचनाएं

जिन्हें आप पत्रिका में प्रकाशित कराना चाहते हैं तो निम्न पते/ ई-मेल पर भेजें।

पता : यनी हाउस 141, अमरनाथ कॉलोनी सर्वधर्म कोलार रोड, भोपाल - 462042 (म.प्र.)

प्रशासनिक कार्यालय - रंग संस्कृति पब्लिकेशन US-6/DK-4 दानिश कुंज कोलार रोड भोपाल

मो. : 9425004536, 9424410981 Email : rangsanskriti@gmail.com



स्कैन करें।

+ PAIN CLINIC +

डॉ. राधवेन्द्र साध

डॉ. आर्थ, एम.एस. (अस्थि रोग), एफ.बी.ओ.एस., एफ.एन.आईओ.एच.

अस्थि एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ

स्पाईन सर्जन

हैंड एवं नर्व (नस) रिकंस्ट्रक्टिव



प्रतिदिन - सायं 5 से 9 बजे तक, रविवार सुबह 9.30 से 12.30 बजे तक



डॉ. श्रीमती दीपिका साध

एम.एस.सी., डॉ.एच.एम.एस.

होम्योपैथी फैमिली फिजिशियन

समय : सुबह 9.30 से 12.30 बजे तक, शाम : 5.00 से 7.00 बजे तक

डॉ. प्राची साध

एम.बी.बी.एस., फिजिशियन एवं सर्जन

गर्दन दर्द, बैकर आना

मुलने पर अन्य जोड़ों का दर्द

झुनझुनी

मुन्हधन

साईटिंग

पीठ दर्द, कमर दर्द

नसों का दर्द

गतिया

स्पोन्डेलाइटिस



पता : 23, 24, नर्मदा नगर, न्यू फ्रेन्स कॉलोनी
बावड़िया कलाँ, मृत्युन्जय शिव मंदिर के पास, भोपाल | संपर्क :- 9425681936

हर घर
तिरंगा

आजादी का अमृत महोत्सव मनाएं
हर घर तिरंगा लहराएं



स्वतंत्रता दिवस पर
प्रदेशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

D18486/23



तिरंगा हमारे देश के इतिहास, संस्कृति और मूल्यों का प्रतीक होने के साथ
उन चीर शहीदों की देशभक्ति और देशभ्रेत्र का प्रतीक है, जिनके बलिदान
ने बदौलत हथने माज़बूद भारत की विशाखत पाई है। आइये, उनके सम्मान
में देशभक्ति की भावना से प्रेरित होकर प्रदेश के इर घर ऐ तिरंगा लहराएं।

शिवराज चिंह नौहान
मुख्यमंत्री



तिरंगे के साथ यापनी मैलफोटी Harghartiranga.com पर यापनी बचलोड लौं
या इस website पर लघुअल फोटो पिल करें।